सवश्रेष्ठ पटकथा

१. किसी फिल्म को देखने के लिए आपको कौन सी झूठी कहानी गढ़नी पड़ी ? पूरी कहानी प्रथम श्रेणी के मजिस्ट्रेट से अटेस्ट करवा कर भेजें । जिसकी कहानी सबसे मनोरंजक होगी वहीं सर्वश्रेष्ठ पट-कथा मानी जायेगी ।

२. किस फिल्म को देख आपको ऐसा लगा कि भारत में अमीरी और गरीबी का फर्क पार्क में युगल गान गाकर मिटाया जा सकता है ?



या

भारत में समाजवाद बस आ ही गया समझो ?

३. किस फिल्म को देख आपको स्वयं चोरी डकैती, मार-धाड़, अपहरण, बलात्कार और खून-खच्चर करने की महान प्रेरणा मिली ?

४. किस फिल्म को देख इम्तान में पास होने के लिये आपने किताबें पढ़ना छोड़ जय संतोषी मां का व्रत रखना शुरू किया ?

५. किस फिल्म में हीरो के करतब देख आप भी बीस गुंडों से अकेले भिड़े और छः महीने हस्पताल में सरकारी चारपाई तोड़ते रहे ?

सर्वश्रेष्ठ अभिनय

१. किस अभिनेता का अभिनय देख आपको अपने मुहल्ले में हनुमान का पार्ट करने वाले रामलीला आर्टिस्ट जगदम्बे की याद नहीं आयी ?

२. किस अभिनेत्री को रोते देख आपको ऐसी हंसी नहीं आयी जैसी तब आयी थी जब आपने अपने दुश्मन को केले के छिलके पर से फिसलते देखा था ?

३. जब युगल गान के समय आपका बच्चा रोया न था ।

४. जब हीरो गम में बार में शराब पी रहा था और सामने की सीटों वाले 'मर बेहया' नहीं चिल्ला रहे थे ।

५. जब हीरो हीरोइन प्रेम वार्ता कर रहे थे और लोग सीटों पर करबटें बदल कर चर्रर-पर्रर की आवाज पैदा कर रहे थे ।



सर्वश्रेष्ठ फाइट कम्पोजिंग



१. किस फिल्म की फाइटिंग के दौरान आपको प्रेमिका जोश में आकर मूंगफली उंगलियों से ही चटका कर तोड़ रही थी ?

२. किस फिल्म में चालीस गुंडों से निबटने के बाद हीरो का हेयर स्टायल और कपड़ों का क्रीज बिगड़ गया था ?

३. किस फिल्म की फाइटिंग में लोग हीरो से विलेन को 'और मार और मार दुष्ट को' फर्माइश कर रहे थे ?

४. किस फिल्म की फाइटिंग में मुक्का बाद में पड़ा और आवाज पहले नहीं आई थी ?

५. किस फिल्म के फाइट को देख कर आप कंडक्टर से लड़ पड़े थे और उसने आपको बस से उतार दिया था और आपको पैदल घर आना पड़ा था ?

सर्वश्रेष्ठ संवाद

१. किस फिल्म के डॉयलाग बुलवाने के लिए यारों ने आपको कैंटीन में सबसे अधिक चाय पिलाई ?

२. किस फिल्म के डॉयलाग सुन आपकी प्रेमिका ने अपना सिर आपके कंधे पर टिका दिया ?

३. आपका पनवाड़ी किस फिल्म के डॉयलाग पान पर चूने व कत्थे के साथ लगता है ?



४. आपके घर में पाँच वर्ष से छोटी आयु के सदस्यों की जुबान पर किस फिल्म के संवाद बगैर टिकट चढ़ गये हैं ?

सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफी

१. किस फिल्म के प्रभाव से आपकी प्रेमिका आपका हाथ अपनी कमर में डलवा कर फोटो खिंचवाने को तैयार हो गई ?

२. किस फिल्म में आपको पीले आसमान और सफेद पेड़ों के दर्शन नहीं हुए और बर्फ सफेद थी लाल या बेंगनी नहीं ?



सर्वश्रेष्ठ निर्देशन

१. किस फिल्म में आपको इतना अच्छा निर्देशन मिला कि अपनी सीट फटाफट मिली हॉल में ?

२. किस फिल्म में आपको पिछली सीट



वालों ने डॉयलाग बन्द करने या सिर नीचा करने का निर्देशन नहीं दिया ?

३. किस फिल्म में आपको प्रेमिका ने पॉपकार्न या आइसक्रीम लाने का प्रेम भरा निर्देशन दिया ?

नियम

१. कोरे कागज पर अपनी प्रविष्टियाँ भेजें।

२. हमारा निर्णय अन्तिम रूप से आपको मान्य होगा । मान्य न भी हो तो हमारा क्या बिगाड़ लोगे ?

३. हर प्रविष्टी के साथ पचास रुपये का पोस्टल आर्डर आना जरूरी है। प्रविष्टी हम रद्दी की टोकरी में फेंक देंगे और पचास रुपयों से स्टॉफ के लिए पिकनिक मनाने का प्रोग्राम बनाया जायेगा ।

४. दीवाना अनफेयर फिल्म एवार्ड देने के लिए किसी फंकशन का आयोजन



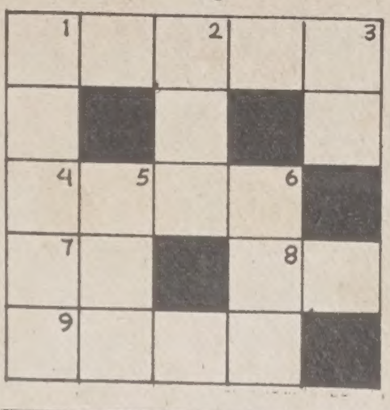
नहीं होगा । हम पार्सल से एवार्ड भेज देंगे ।

५. किसी को कोई शिकायत हो तो उसे वह कागज पर लिख कर जमना जी में प्रवाहित कर ले ।

६. जजों के पैनल में हम सब घर के ही आदमी होंगे ।

दीवाना वर्ग पहेली

15 रुपये पुरस्कार जीतिये



अन्तिम तिथि : ३० अप्रैल १६८०

संकेत

बायें से दायें

१. हेराफेरी की रंगदार आय । (२-३)

४. एक फिल्मी हास्य अभिनेतापन ! लेकिन यह बात किसी को न बताना । (४)

७. आग में जो संस्कार होता है । (२)

८. बाकी माल में महीन टुकड़े मिलेंगे ? (२)

६. रसदार कवि जो गन्दगी का प्राकृतिक भंडार है ? (४)

ऊपर से नीचे

१. इस जगह लकड़ी के स्टोर हैं ! (५)

२. किस में और करनी में बहुत बड़ा फर्क है ? (३)

३. पहली चीख निकलने पर कौन-सी फसल मिलेगी ? (२)

५. इसे करने के लिए दूसरों से आगे रहना पड़ता है ! (३)

६. यह आ जाये तो विश्वास हो जाता है । (३)

दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

हा हा हा

● पुत्र, 'डैडी, आपकी शादी मम्मी से कैसे हुयी ?'

पिता, 'बेटा भाग्य का खेल ही समझो। मैं चौथी मंजिल पर रहने वाली लड़की के साथ भागने वाला था । मैं उसे भगाने सीढ़ी लेकर आया बदकिस्मती से सीढ़ी दूसरी मंजिल तक ही पहुंची । दूसरी मंजिल पर खिड़की पर तुम्हारी मां थी ।'

● शहर में ट्रामें चलती थीं अतः गलियों में ट्राम की लाइनें बिछी थीं । एक बेचारी बूढ़ा जो आधुनिक वस्तुओं से बिलकुल अपरिचित थी लेकिन बहुत देर से ट्राम को देखती रही और उस पर पैर रखने का साहस नहीं कर पा रही थी क्योंकि उसने सुना था कि ट्रामें बिजली से चलती हैं । एक युवा पुलिस मैन ने जब यह देखा तो बुढ़िया के पास गया ।

बुढ़िया ने उससे पूछा, 'बेटा, अगर मैं अपना पैर ट्राम की पटरी पर रखूं तो मुझे बिजली का झटका तो नहीं लगेगा ?'

पुलिस मैन बोला, 'नहीं मां जी ! अगर आप एक पैर पटरी पर और दूसरे पैर से ऊपर लगी तारों को छूने की कोशिश न करें तो ।'

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

मेष : खर्चा एवं वैर-विरोध से परेशानी, लाभ कम होगा, शत्रु हार मानेंगे, रुकावटें दूर होंगी और भाग्य सहारा देगा जिससे कार्य सिद्ध होंगे, बनते कामों में पुनः बाधा, फिर भी आपके काम पूरे हो जायेंगे ।

वृष : रोजगार में लाभ एवं साहस शक्ति से कार्य बना लेंगे, लाभ खर्च समान, विरोधी अधिक तो रहेंगे पर कुछ बिगाड़ न सकेंगे । यात्रा की आशा है, मित्रों से सहयोग, रोजगार बढ़ेगा ।

मिथुन : किसी शुभ या मनोरंजक कार्य पर व्यय, लाभ आशा अनुसार, सेहत खराब या सुस्ती छाई रहेगी, स्थायी काम धन्धों से लाभ, अचानक वैर-विरोध से परेशानी, लाभ अच्छा पर मिलेगा देर से ।

कर्क : आर्थिक क्षेत्र में कठोर परिश्रम से सफलता मिलेगी, शत्रु मुंह की खायेंगे, धार्मिक कामों में धन व्यय, राज्य कार्यों में व्यय करने पर सफलता मिलेगी, बिगड़े काम बनेंगे, रोजगार ठीक चलेगा ।

सिंह : लाभ खर्च समान, आलस्य का प्रभाव रहेगा, दिन ठीक ही रहेंगे, किसी नए काम का विचार बनेगा, साहस शक्ति बढ़ेगी, लाभ में सुधार होगा, यात्रा सावधानी से करें, लाभ यथापूर्व ही ।

कन्या : शुभ समाचार की प्राप्ति होगी, दौड़ धूप अधिक, बनते कामों में बाधा, विरोध अधिक होगा, व्यर्थ के विवाद से बचें, भाग्य सहारा देता रहेगा, बड़े लोगों के सम्पर्क से आनन्द प्राप्त होगा ।

तुला : वातावरण अनुकूल पर संघर्ष काफी करना पड़ेगा, व्यय अधिक, लाभ देर से मिलेगा, दौड़-धूप अधिक एवं सफल भी रहेगी, शुभ कार्य पर व्यय होगा, यात्रा अचानक ही करनी पड़ेगी ।

वृश्चिक : विशेष परिश्रम से लाभ होगा, व्यय बढ़ेगा, वाद-विवाद से बचें, लाभ के चान्स मिलेंगे, कारोबार मध्यम, घरेलू झंझट बढ़ेंगे, सावधानी से रहें तो अच्छा है, हालात सुधरेंगे, स्थायी काम धन्धों से लाभ बढ़ेगा ।

धनु : स्थायी काम धन्धों से लाभ, शुभ समाचार मिलेगा, आर्थिक क्षेत्र में सख्त परिश्रम करने पर ही सफलता मिलेगी, शुभ फल ज्यादा, अशुभ फल कम होंगे, लाभ खर्च समान, साहस शक्ति से काम बना लेंगे ।

मकर : अनावश्यक खर्चा होगा, परिश्रम का फल पूरा न मिलेगा, कारोबार की दशा संभलेगी, लाभ भी ठीक ठीक होता रहेगा, विशेष परिश्रम से लाभ होगा, जरूरी काम बन जायेंगे, यात्रा छोड़ दें ।

कुम्भ : यात्रा हो सकती है, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, कोई बिगड़ा हुआ काम बन जायेगा, व्यय यतार्थ, रोजगार सुधरेगा, और लाभ भी समय पर मिलता रहेगा, भाग्य साथ देगा ।

मीन : छोटी छोटी बातों से परेशानी, मित्र सहयोग मिलता रहेगा, साहस शक्ति से काम लेंगे तो आर्थिक दशा सुधरेगी, कारोबार भी ठीक चलेगा, लोगों में वाद-विवाद से परेशानी, सावधानी से काम करें ।

आपके पत्र

दीवाना का तीसरा अंक प्राप्त हुआ । मुख पृष्ठ पर दृष्टि पड़ते ही दीवानगी चढ़ गयी । सभी स्तम्भ अच्छे लगे, मुख्य कर 'खेल खिलाड़ी,' 'चुनाव में पिटे हुए नेता,' 'डैनिस जींस की महिला दीवानी' अति पसन्द आये । मोटू-पतलू स्तम्भ को रंगीन न देख कर अति निराशा व दुख होता है। अतः आपसे अनुरोध है कि मोटू-पतलू स्तम्भ को आकर्षण रंगों द्वारा छापने की कृपा करें ।

हमारे शहर में दीवाना पत्रिका समय पूर्वक प्राप्त नहीं होती है जिसके कारण काफी प्रतीक्षा करनी पड़ती है ।

राजेन्द्र कुमार थापा—गोरखपुर

खुशी एवं उल्हास के वातावरण में दीवाना का अंक ३ पढ़ रहा था कि अंक ४ भी मिल गया । इस अंक के मिलते ही एक बार तो मुझे लगा कि शायद मैं स्वप्न देख रहा हूं । सच मानिये इसके मिलते ही खुशी दुगनी हो गई ।

स्थायी स्तम्भों के साथ मुख्य रूप से चार मिलावटी कहानियाँ, रुकावट के लिये खेद है, पसंद आये । आपको पता लगता है कि आप बच्चे नहीं है जब, पढ़कर अब ऐसा प्रतीत हो रहा है कि वाकई हम बच्चे नहीं है ।

उमेश ज्ञान चंदानी—बिलासपुर

दीवाना का १ मार्च, ८० का अंक खरीद कर पढ़ा। गर्मी के इस मौसम में मुख पृष्ठ देख कर मुंह में पानी भर आया । 'अगर मनुष्यों के नाक की जगह सूंड होती' पढ़कर बार-बार हँसी आ रही है । वास्तव में दीवाना की कल्पना को दाद देने को जी चाहता है । चुनावी हंगामे, 'सवाल यह है ?' बहुत ही रोचक लगा । छोटे बच्चों की प्रतिभा में निखार लाने के लिए 'रंग भरो प्रतियोगिता' भी अच्छा लगा । दीवाना की छपाई व पेपर कटिंग की तरफ विशेष ध्यान दें ।

दीन दयाल शर्मा—रावतसर

मैं करीब दो महीने पूर्व से ही 'दीवाना' का नियमित पाठक हूँ । मैं प्रथम बार 'दीवाना' के लिए प्रथम पत्र लिख रहा हूँ इस स्तम्भ के लिए मुझे एक साथ 'दीवाना' के दो ताजे अंक प्राप्त हुये क्योंकि पिछला अंक किसी कारण से समय से न पढ़ सका था । नये अंक (१५-२-८०) की सभी सामग्री मन को छू गई । दीवाना पैरोडी, 'खेल-खिलाड़ी' फीचर 'चुनावों में पिटे हुए नेता क्या करें ?' और सिलबिल-पिलपिल की 'परलोक दल' विशेष अच्छे लगे । सम्पादक जी, यदि मैं आपकी इस पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनता हूँ तो क्या दीवाना डाक द्वारा तभी मिल जाती है जब बुक स्टालों पर आती है या कुछ देर से प्राप्त हुआ करेगी ? क्या किसी संस्था के लिए 'दीवाना के वार्षिक चन्दे में कुछ छूट मिलती है ? मेरी ओर से दीवाना के लिए शुभकामनायें ।

मुकेश कुमार गुप्ता—खुरजा

दीवाना का वार्षिक चन्दा ४८ रु० मनी आर्डर से भेजने पर दीवाना आपके घर समय से पहुंचता रहेगा । —सं०

आपका दीवाना साप्ताहिक का नया अंक प्राप्त हुआ । इस अंक में धारावाहिक उपन्यास 'अनहोनी' की आठवीं किस्त बेहद पसन्द आयी । इस अंक में मुझे फीचर 'चुनावों में पिटे हुए नेता क्या करें' ने विशेष प्रभावित किया । काका के कारतूस न होने से बेहद दुख हुआ । कृपया आप काका के कारतूस बन्द न करें ।

तसनीम अहमद खान—मुरादाबाद

मुख पृष्ठ पर

जब से सर में तेल लगा
चिल्ली का रूप बदल गया
मैं ठण्डी आहें भरती हूँ
वह गीत तेल का गाता है।
मेरी कोठी की खूँटी पर
अब जगह नहीं कुछ और टंगे
जिसके हों कोठी चार सखे
उसके सर पर यह तेल लगे।

दीवाना
अंक : ६ वर्ष : १६
१ अप्रैल, १९८०

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दे
छमाही: २५ रु० वार्षिक: ४८ द्विवार्षिक: ९५ रु०

काका के कारतूस

प्रश्न 'दीवाना' के दीवानों के, उत्तर काका हाथरसी के



वाई० के० अग्रवाल, दीमापुर (नागालैंड)
प्र० : आपकी एक पुरानी गर्ल-फ्रेंड आपका पता पूछ रही थी। अब भी आप प्रेम कर सकते हैं, क्या ?
उ० : या अनुरागी चित्त की गति समझै नहीं कोय,
त्यों-त्यों डूबे प्रेम रस, ज्यों ज्यों बूढ़ो होय।

कृष्ण कांत अजनबी पाली (राज०)
प्र० : आपके चित्र तो देखे हैं, लेकिन साक्षात नहीं देख सकता हूं ?
उ० : दीदार करने के लिए, मिलता नहीं मौका।
बहला लिया करते है दिल, तस्वीर देखकर ॥

किशोर कुमार आर. गुप्ता, अमरावती
प्र० : चोर को काली रात, प्रेमी को चांदनी भाती है तो आपको ?
उ० : प्रेमी चाहे प्रेमिका, चोर चाहता माल।
लखि नोटों का लिफाफा, कवि हो जाए निहाल।

चन्द्रभान अनाड़ी, जबलपुर
प्र० : लड़कियों के सभी अंग नाजुक होते हैं, लेकिन दिल सख्त क्यों होता है।
उ० : लड़के ललचाते रहें, देख अंग सुकुमार।
पत्थर जैसा हृदय ही, उनका पहरेदार ॥

भरत मटाई जानी, इंदौर
प्र० : पाप करते समय भी मनुष्य भगवान का नाम क्यों लेता है ?
उ० : ईश्वर को इस वास्ते, याद करें हम-आप।
बांट लेंय भगवान भी, फिफ्टी-फिफ्टी पाप ॥

ओम प्रकाश मटेजा, पानीपत
प्र० : यदि किसी मौहल्ले में मकान किराए पर लेना हो तो क्या करना चाहिए ?
उ० : शादी करके लाइए, सुन्दर बीबी जान।
रड़ुआ-भड़ुआ देखकर, कोई न देय मकान ॥

एन० सी० शर्मा 'आरीनव' गढ़ा जबलपुर
प्र० : आपकी बत्तीसी में अब कितने दांत शेष रह गए हैं ?
उ० : यह पोशींदा राज है, बतलाएं किस भांत।
नेताओं की तरह हम, नहीं दिखाते दांत ॥

किरण कुमार, चाँदपुर रोड, जोधपुर
प्र० : अपनी शादी में करूं, काका को इनवाइट,
नहीं आए तो बुझ जाएगी, मेरे दिल की लाइट ॥
उ० : मिला निमंत्रण ब्याह का बेटा किरण कुमार,
लाइफ भर पाते रहो, प्रिय वाइफ का प्यार।

शिवन लाल खत्री, रायपुर (म. प्र.)
प्र० : औरतों की गाली किन मर्दों को अच्छी लगती है ?
उ० : रूप रंग पर हो रहे, जीजा जी बलिहार,
साली को गाली लगे, रस की भरी फुहार।

गौरी शंकर, कपूरीसर (बीकानेर)
प्र० : बचपन में प्यार मुफ्त मिलता है, जवानी में चुराना पड़ता हैं, तो बुढ़ापे में ?
उ० : दिल को दिलासा देके, बुढ़ापे को काटिए,
नित सुबह-शाम यार की, तस्वीर चाटिए।

मुरलीधर तलरेजा, भाटापारा (म० प्र०)
प्र० : पत्नी को किस बहाने से उसकी मां के पास भेजा जा सकता है ?
उ० : दिलवादो ससुराल से, उसको फर्जी तार,
बिटिया फौरन चली आ, तेरी मां बीमार।

कामेश कुमार राज, गढ़ा, जबलपुर
प्र० : काकी जी जब आप पर गुस्सा होती हैं, तो आप क्या करते हैं ?
उ० : उनको आता है प्यार पर गुस्सा,
हमको गुस्से पे प्यार आता है।

वध्या सिंह निराला, पनागार (जबलपुर)
प्र० : पाप और दाग में क्या अन्तर है काका ?
उ० : दाग पाप का फर्क यह, समझ लीजिए आप,
दाग छूट जाए मगर, नहीं छूटता पाप।

सतिन्द्र सिंह साहनी, सुभाष नगर, बरेली
उ० : आधुनिक युग में सर्वाधिक कद्र किसकी है ?
प्र० : लाठी वाला, भैंस पर रखता है अधिकार,
सत्ता जिसके हाथ में, उसकी जय-जयकार।

प्रेम सागर ग्रोवर, करनाल (हरियाणा)
प्र० : यदि आप दाढ़ी कटवा कर काकी के पास जायें तो ?
उ० : काकी को भायें नहीं, बिना बाल के गाल,
लात मार फटकार दें, घर से देंय निकाल।

मो० जहांगीर, मेन रोड, राँची
प्र० : काका जी 'लोट-पोट' और 'दीवाना' में क्या फर्क है ?
उ० : छोटे थे तब तक किया, 'लोट-पोट' से प्यार,
बड़े हुए तो बन गए, 'दीवाना' के यार।

राजकुमार कासलीवाल, रानोली (सीकर)
प्र० : 'आर. एस. एस.' से कुछ लोग क्यों डरते हैं ?
उ० : शाखा में ले जायेंगे, प्रातःकाल ज़गायं,
इसीलिए तो संघ से, 'काका' भी घबरायं।

नरिन्द्र कुमार निन्दी, कपूरथला
प्र० : मेरे सामने वाली खिड़की में, एक चाँद का टुकड़ा रहता है ?
उ० : ऊबड़-खाबड़ चांद है, मारी अगर छलांग,
खतरे में पड़ जाओगे, टूट जायेगी टाँग।

जगदीश जैन, इन्दौर (म. प्र.)
प्र० : शीशी भरी गुलाब की, पत्थर पे फोड़ दूं,
काका तुम्हारी याद में, पढ़ना भी छोड़ दूं ?
उ० : लिखना भी छोड़ देना, पढ़ना भी छोड़ना,
बनके नकलची क्लास में, चढ़ना न छोड़ना।

तिलकराज अरोड़ा, खुर्जा (उ० प्र०)
प्र० : फूल डाल पर अच्छा लगता है या बाल पर ?
उ० : लाली के जूड़े चढ़े, फूल फूल मुसकाय,
डाली पर हो बोरियत, सूख-सूख मुरझाय।

अशोक जौहर नीलम, देहरादून
प्र० : सफल नेता किसे कहेंगे ?
उ० : नेता वही महान जो, भागे वोट बटोर,
पहले मीठा-मुलायम, पीछे बने कठोर।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

उपहार

कन्हैया लाल कपूर

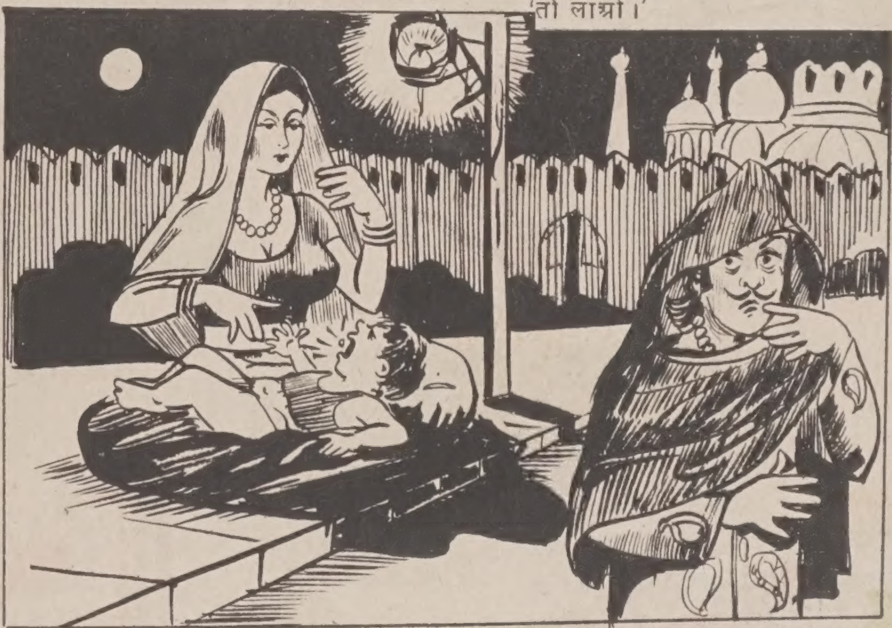
यदि महाराजा तकलीप्रसाद ने रिश्वत या घूस लेने की कानूनी अनुमति दे दी थी तो इसका कारण यह नहीं था कि वे स्वयं रिश्वतखोर थे या रिश्वतखोरी को पाप की बजाय पुण्य समझते थे। वास्तव में यह आदेश उन्होंने अन्तिम अस्त्र के रूप में दिया था क्योंकि उनके विचार में इसके सिवा और कोई चारा ही नहीं था। दस वर्ष पूर्व उन्होंने जनता को वेद, कुरान, अंजील और गुरु ग्रन्थ साहब का वास्ता देकर समझाया था कि रिश्वत लेना या देना महापाप है लेकिन लोगों ने उन्हें यह कहकर टाल दिया कि हम धार्मिक पुस्तकों के शेष कौन-से निर्देशों का पालन करते हैं जो इस निर्देश को स्वीकार कर लें। पांच वर्ष पूर्व उन्होंने एक राजादेश जारी किया था कि रिश्वत लेने और देने वाले को गोली से उड़ा दिया जाएगा—लेकिन पांच वर्ष की इस अवधि में कोई व्यक्ति भी रिश्वत लेते या देते हुए नहीं पकड़ा गया था। कारण? कारण यह कि पकड़ने वाले स्वयं रिश्वतखोर थे। तंग आकर महाराजा तकलीप्रसाद ने अपनी प्रजा को रिश्वत लेने और देने की खुली छुट्टी दे दी। उनका कहना था कि कभी-कभी 'गालिब' के कथनानुसार दर्द जब हद से बढ़ जाता है तो दवा हो जाता है।

महाराज की इस घोषणा पर 'जिल्लत नगर' में दीपोत्सव मनाया गया। प्रत्येक नागरिक ने बगलें बजाकर अपने पड़ोसी से कहा, 'आखिर भगवान ने हमारी सुन ली। जीवन का आनन्द तो अब आएगा। भला रिश्वतखोरी के बिना जीवन भी कोई जीवन है।'

कलम से

और यों रिश्वतखोरी की ऐसी आंधी आई कि पिछले सारे रिकार्ड भंग हो गए··· महाराज को प्रत्येक दिन रौंगटे खड़े कर देने वाले समाचार मिलते लेकिन उन्हें रत्ती-भर भी क्रोध न आता। वे कहते, 'जब लोग इस चीज को पसन्द करते हैं तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है।'

धीरे-धीरे ऐसी स्थिति हो गई कि जिल्लत नगर में कोई भी काम बिना रिश्वत दिए हो ही नहीं सकता था। प्रत्येक कार्यालय के दरवाजे पर साइनबोर्ड लगा दिया गया—जिस पर मोटे अक्षरों में लिखा था—'यदि आप रिश्वत के बिना काम निकालना चाहते हैं तो आप मूर्ख हैं या मसखरे।' खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है इसलिए रिश्वतखोरी उन विभागों में भी जा पहुंची जो एक समय से उससे निर्लिप्त थे। उदाहरण के लिए जब लाला गरीबदास अपने लड़के को कालेज में प्रवेश दिलाने पहुंचे तो



प्रिन्सिपल महोदय ने उनसे कहा—'हम आपके लड़के को भरती कर लेंगे लेकिन पहले मामला तय हो जाए।'

'कैसा मामला साहब! मेरा लड़का शुरू से छात्रवृत्ति प्राप्त करता रहा है। इस वर्ष पूरे विश्वविद्यालय में दूसरे नम्बर पर आया है।'

'वह तो ठीक है—लेकिन आपने हमारे उपहार के बारे में क्या सोचा है?'

'उपहार? तो गोया आप भी उपहार लेते हैं?'

'क्यों नहीं। जब शेष विभागों में इसका प्रचलन है तो शिक्षा-विभाग ने क्या अपराध किया है?'

'आप ठीक कहते हैं लेकिन सेवक बहुत निर्धन है।'

'आप शायद नहीं जानते कि निर्धनों के लिए जिल्लत नगर में कोई स्थान नहीं है।'

'लेकिन महाशय! मेरा लड़का बड़ा प्रतिभाशाली है। आपके कालेज का नाम ऊंचा करेगा।'

'हमें कालेज के नाम की इतनी चिन्ता नहीं है जितनी उपहार की। कहिए पांच सौ देंगे आप?'

'श्रीमान मेरे पास तो फीस देने के लिए भी पैसे नहीं हैं। मैं तो फीस में भी रियायत चाहता हूं।'

'हम आधी फीस माफ कर देंगे लेकिन इसके लिए अलग से उपहार देना होगा।'

'मेरी आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब है। मुझ में उपहार देने की सामर्थ्य नहीं है······।'

'आप व्यर्थ में मेरा समय नष्ट कर रहे हैं। ऐसे ही मुफ्तखोर थे तो यहां आए ही क्यों थे?'

तार घर के एक हरकारे ने बाबू को सम्बोधन करते हुए कहा, 'आपका तार है।'

'तो लाओ।'

'वाह, यह खूब रही। अजी साहब तार है कोई साधारण पत्र नहीं।'

'लेकिन तार पहुंचाना तो तुम्हारा कर्त्तव्य है।'

'आजकल कौन अपना कर्तव्य निभा रहा है, जो हम निभाएं।'

'अच्छा तार दो। अगर कोई शुभ समाचार हुआ तो मुंह मीठा कराऊंगा।'

'और अगर कोई अशुभ समाचार हुआ तो?'

'फिर तो विवशता है।'

'क्षमा कीजिए, हमें सौदा पसन्द नहीं।'

'आखिर तुम चाहते क्या हो?'

'वही जो जिल्लत नगर का प्रत्येक व्यक्ति चाहता है।'

'अर्थात् उपहार—और अगर उपहार न दिया गया तो······?'

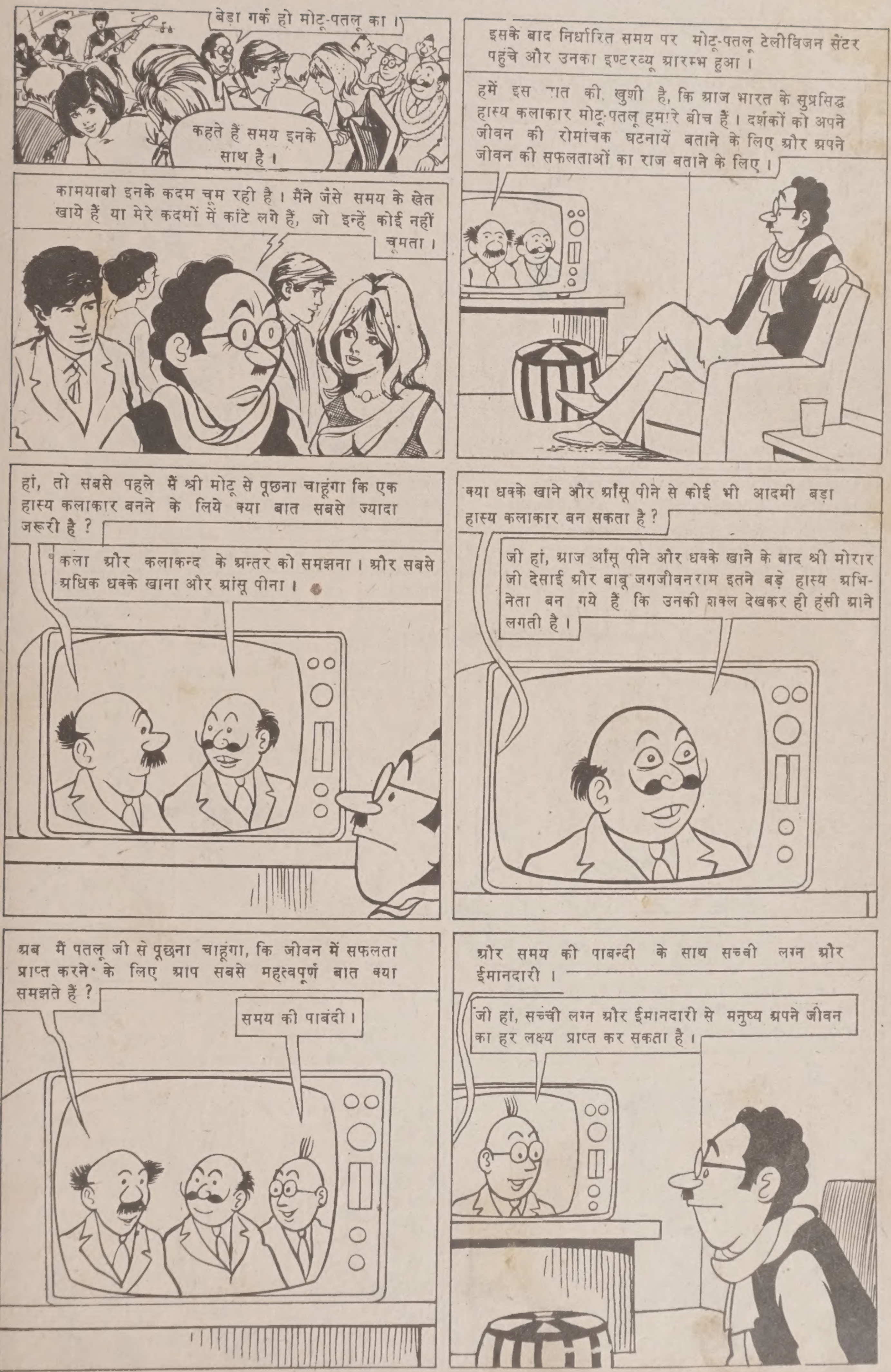
शेष पृष्ठ ३८ पर


मोटू पतलू
लोग कहते हैं, 'समय बड़ा बलवान भाई समय बड़ा बलवान।' और इसे समय की ही बात समझिये कि कुछ दिन पहले मोटू-पतलू को एक ज्योतिषाचार्य ने बताया कि आजकल तुम्हारे सितारे बहुत अच्छे हैं, समय तुम्हारे साथ है। तुम समय की पाबन्दी से काम करते चलोगे तो सफलता तुम्हारे कदम चूमेगी। और हुआ भी ऐसा ही। मोटू-पतलू ने जिस काम में हाथ डाला, उनके वारे-न्यारे हो गये। समय की पाबन्दी से वे जहां गये, वहीं उनके गले में फूलों के हार पड़े।
आज साढ़े सात बजे हमें मोरिया होटल में फिल्म स्टार्ज नाईट का उद्घाटन करने का निमंत्रण मिला है। और ठीक नौ बजे टेलीविजन पर हमारा इन्टरव्यू है।
हमें समय की पाबन्दी का बहुत ख्याल रखना पड़ेगा।
समय की पाबन्दी को तो हमने अपने जीवन का लक्ष्य बनाया हुआ है। घसीटाराम, को भी अपने साथ ले चलो।
अभी सात बजे हैं। हम निर्धारित समय पर होटल पहुंच जायेंगे।
कोई बात नहीं बच्चू। वह समय भी तो निर्धारित समय पर आयेगा। जब तुम्हारा जनाजा निकलेगा।
वक्त साथ दे तो मनुष्य को बड़ा आदमी बनने में जरा देर नहीं लगती।
समझ गया।
ठीक कह रहे हो।
यहां कितने लोग हमारे स्वागत के लिए आंखें बिछाये खड़े हैं!
अंधी हो जायें ऐसी आंखें।
हम समय पर आये हैं।
होटल पहुंचकर मोटू-पतलू ने फिल्म स्टार्ज नाइट का उद्घाटन किया। बहुत बड़े जश्न में वहां उन्हें फूलों से लाद दिया गया।



तभी घड़ी ने घंटे बजाये और मोटू- पतलू चौंक पड़े ।
टन…टन…टन टन…टन…टन ।
छः बज गये । हमें सात बजे पहुंचना है । चलो जल्दी करो ।
एक, दो, तीन, चार, पांच, छः ।
कहां जा रहे हो ? अरे अभी तो तीन बजे है । घड़ी की तरफ तो देखो ।
चले गये । घड़ी की तरफ देखा तक नहीं । यह आलू बुखारे तो ठीक समय पर सम्मेलन में पहुच जायेंगे ।
बेड़ा गर्क हो इस घड़ी का । मैंने सूई तीन पर कर दी, फिर भी इसने छः बजाये हैं ।
मैंने समय को अपने अनुसार चलाना चाहा पर इसने मुझे चला दिया । मैं सत्यानास कर दूंगा इस घड़ी का ।
कहां है पेचकस और हथौड़ी । यहीं कहीं रखते हैं मोटू पतलू ।
बीस साल के तजुर्बे में मेरी ऐसी बेइज्जती कभी नहीं हुई ।
मैंने अच्छे-अच्छे ठीक कर दिये । समय की और समय बताने वाली इस घड़ी की तो औकात ही क्या है ।
इसकी गरारियों को ऐसे मरोड़ूंगा कि समय कुछ होगा और यह कुछ और बतायेगी ।
मैं तो अपनी पूरी हार्स पावर लगा रहा हूं । पर इसके सारे पेंच ज… ज…ज…।
जाम पड़े हैं ।
मेरी यह बेइज्जती ।
मैं कबाड़ा कर दूंगा इस घंटे के गुरू-घंटाल का ।
क्या मतलब है ? हथोड़े खाकर भी टक…टक…चल रही है !


तभी घड़ी के पैंडूलम ने घसीटा राम के मुंह पर एक जोरदार मुक्का रसीद कर दिया
और दूसरे ही पल घसीटा राम बेहोश था।
घसीटा राम को जब दोबारा होश आया तो उसकी आंखों के सामने अंधेरा था। और उस अंधेरे में उसे जाने क्या नजर आ रहा था।
हैल्लो, माई डियर घसीटू जी !
क्या मतलब ? तुम कौन हो ?
हम परियें हैं।
समय की परियें।
समय की परियें ? मोटू-पतलू की घड़ी के अन्दर ?
हां ! समय आजकल मोटू-पतलू के साथ है।
तुमनें हमारे हथोड़ा मारा है।
जानते हो इस अपराध की सजा क्या है ?
क्या है ?
यह तुम्हें काल देवता के दरबार में पहुंच कर पता चलेगा।
चलो, स्वर्ग लोक में काल देवता के पास
इसने समय के साथ मजाक किया है।
समय की छोटी-छोटी परियें अब घसीटा राम को बादलों से पार स्वर्ग लोक की ओर लिये जा रही थीं।
आ गया काल चक्र का हैड आफिस।
अब क्या होगा।
मुख्य कार्यालय।
काल चक्र


बेड़ा गर्क हो मोटू-पतलू का।
कहते हैं समय इनके साथ है।
कामयाबी इनके कदम चूम रही है। मैंने जैसे समय के खेत खाये हैं या मेरे कदमों में कांटे लगे हैं, जो इन्हें कोई नहीं चूमता।
इसके बाद निर्धारित समय पर मोटू-पतलू टेलीविजन सेंटर पहुंचे और उनका इण्टरव्यू आरम्भ हुआ।
हमें इस बात की खुशी है, कि आज भारत के सुप्रसिद्ध हास्य कलाकार मोटू-पतलू हमारे बीच हैं। दर्शकों को अपने जीवन की रोमांचक घटनायें बताने के लिए और अपने जीवन की सफलताओं का राज बताने के लिए।
हां, तो सबसे पहले मैं श्री मोटू से पूछना चाहूंगा कि एक हास्य कलाकार बनने के लिये क्या बात सबसे ज्यादा जरूरी है?
कला और कलाकन्द के अन्तर को समझना। और सबसे अधिक धक्के खाना और आंसू पीना।
क्या धक्के खाने और आंसू पीने से कोई भी आदमी बड़ा हास्य कलाकार बन सकता है?
जी हां, आज आंसू पीने और धक्के खाने के बाद श्री मोरार जी देसाई और बाबू जगजीवनराम इतने बड़े हास्य अभिनेता बन गये हैं कि उनकी शक्ल देखकर ही हंसी आने लगती है।
अब मैं पतलू जी से पूछना चाहूंगा, कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए आप सबसे महत्त्वपूर्ण बात क्या समझते हैं?
समय की पाबंदी।
और समय की पाबन्दी के साथ सच्ची लगन और ईमानदारी।
जी हां, सच्ची लगन और ईमानदारी से मनुष्य अपने जीवन का हर लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।



अपनी सफलता में क्या अपनी अक्लमन्दी को महत्त्व नहीं देते ?
अक्लमंदी भी सच्ची लग्न और ईमानदारी का एक हिस्सा है और यह हिस्सा भी समय से जुड़ा हुआ है ।
समय मोटू-पतलू का साथ दे रहा है और मैंने पता नहीं कौन से बल खोले हैं समय के ।
बेड़ा गर्क हो इनके अच्छे समय का । कोई मौका मिले तो मैं भगवान के बनाये हर समय की भी खाट खड़ी करके मोटू-पतलू की लुटिया डुबो दूं ।
और वह मौका भी घसीटराम को जल्दी ही मिल गया । मोटू-पतलु घर पहुंचे तो अगले रोज उन्हें एक और निमंत्रण पत्र मिला, जो दिल्ली की दीवाना फ्रेंड्स क्लब की ओर से था ।
समय की बात है । कितना मान दिया जा रहा है हमें !
हमें एक-एक रुपये के सिक्कों से तोला जायेगा । इस अवसर पर भारत के सबसे बड़े जोकर श्री राजनारायण मुख्य अतिथि के रूप में पधारेंगे । और···
और अपने बहू-रूप को चार चांद लगायेंगे ।
समारोह का समय है, आज शाम ठीक सात बजे । याद रखना ।
याद रखेंगे । आज तक हमने समय की पाबन्दी को निभाया है । यही तो हमारी कामयाबी का राज है ।
इस बार मैं निभाने दूंगा तुम्हें समय की पाबन्दी । सब किए धरे पर पानी फेर कर मैंने भी बैंड ना बजा दिया तो मेरा नाम नहीं । मुझे हर बात में बीस साल का तजुर्बा है । फिर यह समय कहां जायेगा मुझ से बचकर । घड़ी की सुईयों को मैं कहीं से कहीं पहुंचा दूंगा ।
घसीटाराम ने मोटू-पतलू की घड़ी तीन घण्टे पीछे कर दी थी । जब शाम के छः बजने वाले थे तो उनकी घड़ी तीन बजा रही थी ।
जब इस घड़ी में शाम के सात बजेंगे, तो वास्तव में रात के दस बजे का टाइम होगा । और मोटू-पतलू इतना लेट सभा में पहुंचेंगे तो फूलों की बजाये जूतों की बारिश होगी इनके सरों पर ।
घड़ी में अभी तीन ही बजे हैं । और अंधेरा ऐसा हो गया है, जैसे शाम के साढ़े पांच या छः बज गये हों ।
घड़ी बिल्कुल ठीक है । आसमान पर बादल छाये हुए हैं, इसलिए ऐसा लग रहा है जैसे शाम के छः बजे हों ।



आगामी अंक में इन दीवानों से फिर मिलना न भूलिये।

धारावाहिक उपन्यास

अनहोनी

11

लेखिका-संगीता

इस समय उनकी कार जूहू से ही लौट रही थी कि अचानक एक मोड़ पर आती हुई टैक्सी से बचाने के लिए अविनाश ने कार को फुर्ती से ब्रेक लगाए और कार की दिशा मोड़ ली···दुर्घटना होते-होते बच गई लेकिन पद्मिनी का दिल बहुत जोर-जोर से धड़क उठा।

'भगवान् ने बड़ी कुशल की।' वह कंपकंपाती आवाज में बोली।

'अरे नहीं मुन्नी···' अविनाश हंसकर बोला, 'अब मैं बहुत ऐक्सपर्ट हो गया हूं—हां, यह जरूर है कि गाड़ी थोड़े दिनों बाद मैकेनिक के पास जरूर पहुंच जाती है।'

'मैकेनिक···!' पद्मिनी उछलकर सीधी बैठ गई।

इतने में अविनाश की गाड़ी सड़क पर आ गई थी···पद्मिनी ने सम्भलकर कहा—

'अविनाश! आज मैं भी तुम्हें एक सरप्राईज दूंगी।'

'अच्छा···चलो···कहां?'

'बस-बस···यहीं गाड़ी रोक दो।'

अविनाश ने गाड़ी रोक दी और पद्मिनी के कहने पर गाड़ी से उतर आया। पद्मिनी अविनाश का हाथ थामकर गैरिजों की लाईन की ओर बढ़ी···और एक गैरिज के पास रुक गई। अविनाश ने आश्चर्य से पूछा—

'यहां क्यों लाई हो मुझे?'

'देखते रहो···' पद्मिनी इधर-उधर देखकर बोली।

एक अधेड़ आयु, नाटे कद का आदमी मैले-कुचैले काले कपड़े पहने उनके पास आया और कपड़े से हाथ पोंछता हुआ मुस्कराकर बोला—

'अरे पद्मिनी बेटा···आओ, आओ···कहो क्या काम है?'

'शास्त्री चाचा···!' पद्मिनी ने कहा, 'मैं शिव भैया को देखने आई थी—वह क्या किसी की गाड़ी ठीक करने गए हैं?'

'ओहो—क्या तुम्हें नहीं मालूम बेटी?'

'क्या?' पद्मिनी ने आश्चर्य से पूछा।

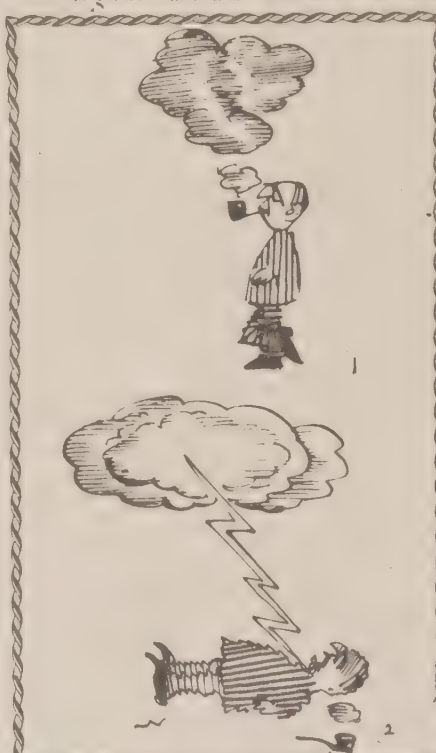
'अरे···इधर तीन-चार दिन से शिव की मां की तबीयत बहुत खराब थी—डाक्टरों ने बताया था कि उन्हें यहां का पानी रास नहीं आ रहा—इसलिए शिव आज अपनी मां को लेकर गांव वापस जा रहा है।'

'ओहो—।'

'आज सवेरे मेरे पास हिसाब करने आया था—तब उसने कहा था कि वह तुम्हारे यहां भी जाएगा।'

'मैं घर से सवेरे ही निकल आई थी—अच्छा चाचा नमस्ते।'

पद्मिनी तेज-तेज अविनाश के साथ



गाड़ी तक आई···जब वह गाड़ी में बैठ गई तो अविनाश ने स्टेयरिंग संभाल लिया—पद्मिनी ने कहा—

अविनाश···पहले हम गोली बार तक चलेंगे।'

'क्यों?' अविनाश ने आश्चर्य से पूछा।

'शिव भैया और उनकी मां से मिलना है।'

'तो क्या वह लोग गोली बार में रहते हैं?'

'हां···भैया शास्त्री के गैरिज में काम करते थे।'

'लेकिन हैं कौन? तुम्हारे भैया वह कैसे हो गए?'

पद्मिनी ने अपनी शिव से भेंट का पूरा वृतांत उसे सुनाया···किस प्रकार सेठ साहब और शोभना ने मिलकर शिव और पद्मिनी की शादी की योजना बनाई थी। अविनाश संभलकर बैठ गया और बोला—

'तो क्या वह भी तुमसे शादी करना चाहता था?'

'यही तो मजे की बात हुई।' पद्मिनी ने हंसकर कहा, 'मैंने मम्मी और डैडी का बोध-भ्रम दूर करने के लिए रक्षाबंधन से लाभ उठाया। रक्षा-बंधन वाले दिन जब भैया हमारे घर आये तो राखी की थाली लेकर आ गई···और शिव भैया भी विस्मय से रह गए और मैं भी···क्योंकि वह स्वयं भी जेब में राखी लेकर आए थे···मुझसे बंधवाने के लिए।'

अविनाश ने एक जोरदार ठहाका लगाया···पद्मिनी ने कहा—

'सच कहती हूं···बड़े ग्रेट हैं शिव भैया···एकदम देवता हैं देवता।'

'स्पष्ट है वरना इतने बड़े आदमी की बेटी से शादी के सपने कौन छोटा आदमी न देखेगा।'

'थोड़ी देर बाद उनकी गाड़ी गोलीबार के बाहर आकर रुक गई। एक टैक्सी बाहर ही खड़ी हुई थी···पद्मिनी और अविनाश गाड़ी से उतरे तो बहुत सारे आदमी उनकी ओर आकृष्ट हो गए। यह दोनों अंदर की ओर बढ़े ही थे कि गली में से शिव और उसकी मां निकलते दिखाई दिये। शिव की मां का चेहरा पीला पड़ा हुआ था और वह बहुत धीरे-धीरे शिव का सहारा लेकर चल रही थीं···उनका शरीर सूखकर कांटा हो रहा था। सहसा शिव ने पद्मिनी को देखा और चौंककर बोला—

'अरे पद्मिनी···तुम यहां?'

'पद्मिनी ने जल्दी से आगे बढ़कर मां को सहारा दिया और बोली—

'हां भैया! मैं तुम्हारे गैरिज गई थी···तुम कई दिन से आए नहीं थे ना घर।'

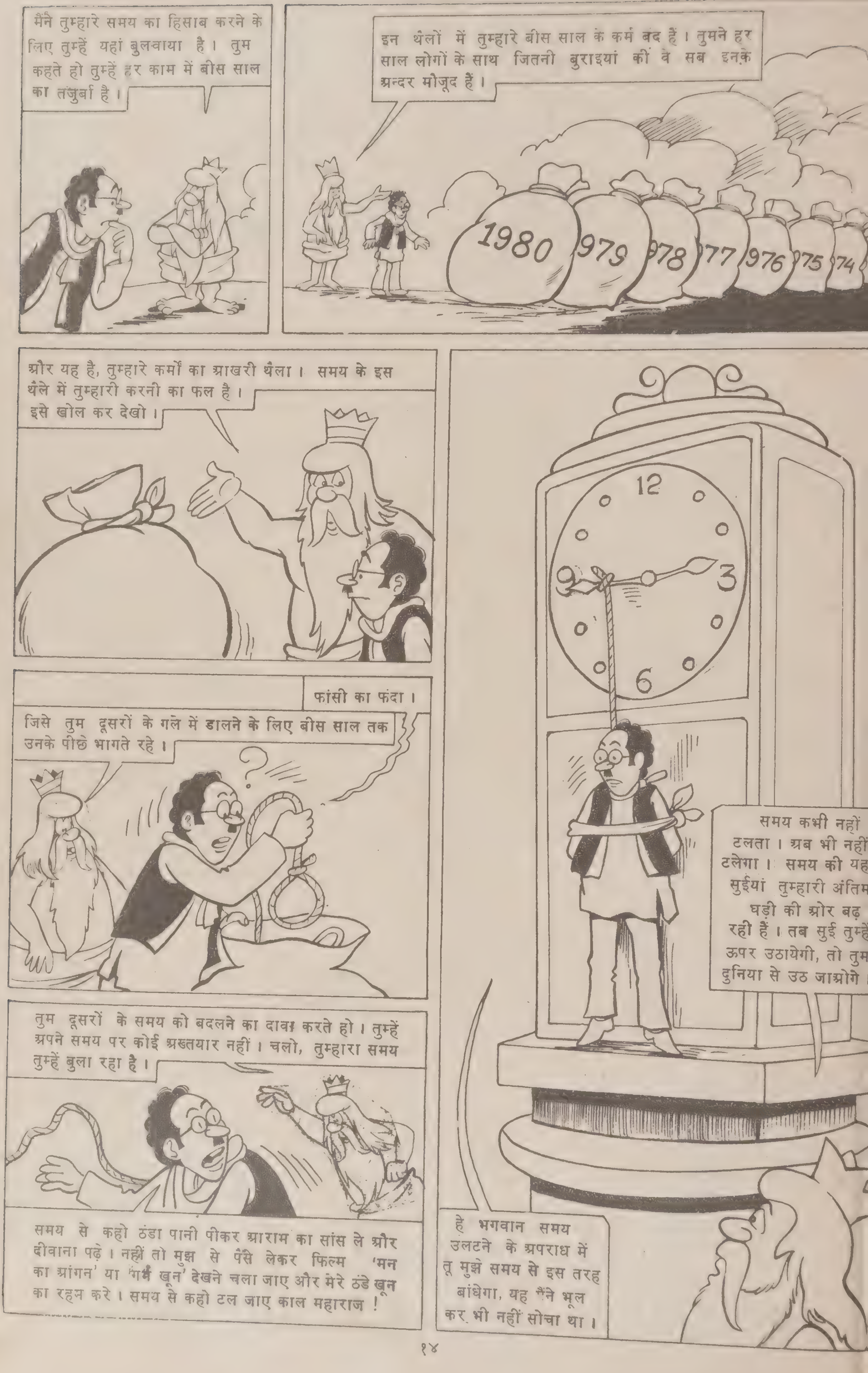
'मां की तबीयत कई दिन से खराब चल रही थी···आज डाक्टरों ने साफ कह दिया है कि यहां का जलवायु मां के स्वास्थ्य के अनुकूल नहीं और उन्होंने मां को वापस गांव ले जाने का परामर्श दिया है—मैं आज ही गाड़ी से इन्हें ले जाऊंगा।'

'शास्त्री चाचा ने मुझे यही सूचना दी थी—इसीलिए मैं सीधी यहां चली आई।'

हंसी



हैं, सभी परियें गायब हो गईं। मैं अकेला रह गया।
नहीं, तुम अकेले नहीं हो। तुम्हारे साथ तुम्हारी बीती घड़ी है।
टिक...टिक
तुम मेरी बीती घड़ी हो ?
अपनी उस घड़ी को याद करो, जब तुमने मोटू-पतलू के सर फोड़े थे।
मैं वह घड़ी हूं, जब तुमने अपना फंदा दूसरे के गले में डाला।
तुम अपनी हर मनहूस घड़ी को भूले हुए हो।
तुम्हारे हर समय और हर घड़ी का हिसाब काल देवता के पास है।
समय की दौड़ में तुम बहुत पीछे रह गये हो।
आंखे बन्द करो अपनी।
लो बन्द कर ली आंखें।
अब खोल दो और सामने देखो।
त···त त···तुम कौन हो
मैं समय का देवता काल महाराज हूं।


मैंने तुम्हारे समय का हिसाब करने के लिए तुम्हें यहां बुलवाया है। तुम कहते हो तुम्हें हर काम में बीस साल का तजुर्बा है।
इन थैलों में तुम्हारे बीस साल के कर्म बंद हैं। तुमने हर साल लोगों के साथ जितनी बुराइयां कीं वे सब इनके अन्दर मौजूद हैं।
1980
979
978
77
976
75
74
और यह है, तुम्हारे कर्मों का आखरी थैला। समय के इस थैले में तुम्हारी करनी का फल है। इसे खोल कर देखो।
फांसी का फंदा।
जिसे तुम दूसरों के गले में डालने के लिए बीस साल तक उनके पीछे भागते रहे।
?
तुम दूसरों के समय को बदलने का दावा करते हो। तुम्हें अपने समय पर कोई अख्तयार नहीं। चलो, तुम्हारा समय तुम्हें बुला रहा है।
समय से कहो ठंडा पानी पीकर आराम का सांस ले और दीवाना पढ़े। नहीं तो मुझ से पैसे लेकर फिल्म 'मन का आंगन' या 'गर्म खून' देखने चला जाए और मेरे ठंडे खून का रहम करे। समय से कहो टल जाए काल महाराज!
12
3
6
9
समय कभी नहीं टलता। अब भी नहीं टलेगा। समय की यह सुईयां तुम्हारी अंतिम घड़ी की ओर बढ़ रही हैं। तब सुई तुम्हें ऊपर उठायेगी, तो तुम दुनिया से उठ जाओगे।
हे भगवान समय उलटने के अपराध में तू मुझे समय से इस तरह बांधेगा, यह मैंने भूल कर भी नहीं सोचा था।

'मैं तुम्हारे यहां भी गया था किन्तु न बाबूजी घर पर मिले और न तुम।'

'हां भैया ! मैं आज सवेरे ही घर से निकल आई थी।'

'दोनों ने मिलकर मां को टैक्सी की पिछली सीट पर बिठा दिया और मां ने पद्मिनी को आशीर्वाद दी। अविनाश उन दोनों के पीछे-पीछे आया था···पद्मिनी ने शिव से कहा—

'भैया ! कहो तो हम लोग तुम दोनों को कार में स्टेशन तक पहुंचा दें।'

'नहीं बहन···अब तो टैक्सी आ गई है।' फिर शिव ने अविनाश की ओर देखकर कहा, 'तुमने इनका परिचय तो कराया नहीं ?'

'भैया···!' पद्मिनी की आंखें झुक गई, 'यह वही अविनाश बाबू हैं जिनके बारे में मैंने एक बार तुम्हें बताया था।'

'अच्छा···!' शिव अनायास चौंककर बोला, 'वह···जब मैंने तुमसे पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं करतीं ?'

'हां भैया।' पद्मिनी का चेहरा लाल हो गया।

'ओ···भगवान !' शिव के होठों से उल्लास भरी आवाज निकली, 'तो तुम्हें तुम्हारे बचपन का साथी मिल ही गया।'

'फिर अविनाश और पद्मिनी को एक साथ ही शिव ने लिपटा लिया और बोला—

'सचमुच···भगवान दो बिछड़े हुए दिलों को अधिक समय तक जुदा नहीं रख सकता···देख पद्मिनी, तू अपनी शादी के दिन भैया को मत भूल जाना।'

'भैया···!' पद्मिनी शरमाकर शिव से लिपट गई। शिव हंस पड़ा और अविनाश से बोला—

'देखो अविनाश···मेरी बहन का दिल बहुत नाजुक है···इसने बहुत बरसों तक तुम्हारे लिए साधना की है—इसे कोई कष्ट मत होने देना।'



'शिव भैया···' अविनाश मुस्करा कर बोला, 'यह तो मेरा जीवन है—मेरी आत्मा है···और कोई अपनी आत्मा को भी कभी कष्ट देता है ?'

'जीते रहो—भगवान दोनों को सदा सुखी रखे···अच्छा पद्मिनी मैं अब जाऊंगा···गाड़ी का समय हो रहा है।'

'जाओ भैया···लेकिन जाते ही पत्र जरूर लिखना।''

'लिखूंगा···और तुम भी उत्तर अवश्य देना।'

शिव ने पद्मिनी और अविनाश के सिरों पर हाथ फेरा···दोनों ने मां का आशीर्वाद भी लिया···फिर शिव टैक्सी में सवार हुआ और टैक्सी चली गई। पद्मिनी और अविनाश खड़े हाथ हिलाते रह गए।

पद्मिनी ने कार फ्लैट के सामने रोकी और जल्दी से कार से उतरकर सीट पर से एक कार्ड उठाया···कालबेल का बटन दबाया और दबाती ही चली गई···कुछ क्षण बाद द्वार खुला और सामने खड़ी हुई लड़की पद्मिनी को देखकर उछल पड़ी—



'अरे पद्मिनी···तू···? मैं सोच रही थी यह कौन मूआ घोड़े पर सवार है ?'

'ले—जल्दी से यह कार्ड पकड़···मेरे पास समय कम है।' पद्मिनी ने कार्ड लड़की को थमाते हुए कहा।

'काहे का कार्ड है यह ?'

'मेरी शादी का···' पद्मिनी जल्दी से बोली, 'परसों···इतवार को···शाम के सात बजे।'

'लेकिन किसके साथ।'

'तुम्हारे हीरो अविनाश के साथ।'

'क्या ?' लड़की बुरी तरह उछल पड़ी।

लेकिन पद्मिनी ने फिर उसकी ओर नहीं देखा···झपटकर कार में सवार हुई और कार स्टार्ट करने लगी तो लड़की ने चीखकर कहा—

'अरे मेरी बात तो सुन···यह सब हुआ कैसे ?'

'शादी के बाद बताऊंगी···मेरे पास समय कम है—पहले सगाई का प्रोग्राम था लेकिन अविनाश की मां शीघ्र शादी पर अड़ गईं।

पद्मिनी की कार सड़क पर दौड़ने लगी···आज सुबह ही से वह कार्ड बांट रही थी··· वह बहुत खुश थी—जिस समय वह जूहू विले पार्ले में अपनी सहेलियों को कार्ड बांट रही थी उसे रास्ते में अविनाश भी मिला था जो अपने दोस्तों को कार्ड बांटता फिर रहा था। दोनों एक-दूसरे को व्यस्त देखकर बहुत हंसे थे और दोनों ने शाम को ठीक पांच बजे जूहू बीच पर मिलना निश्चय किया था···और अब पांच बज चुके थे लेकिन अभी तीन-चार सहेलियों के घरों में कार्ड पहुंचाना रह गया था इसलिए पद्मिनी शीघ्रता कर रही थी···वह किसी सहेली के यहां रुकी नहीं, और सड़क पर उसकी कार फुल स्पीड में दौड़ती रही थी।

बांदा स्टेशन के क्रासिंग से उसने तेजी से कार निकालने का प्रयत्न किया क्योंकि सिगनल की रोशनी पीली हो चुकी थी और लाल होने से काफी देर लग जाती। शाम का समय था इसीलिए ट्रैफिक बहुत था लेकिन क्रासिंग-की समाप्ति पर एक चले हुए बूढ़े राहगीर को जोरदार धक्का लगा और वह हल्की-सी चीख के साथ औंधे मुंह गिरा। उसका सिर फुटपाथ से टकराया और वह बेहोश हो गया···उसके माथे से लाल-लाल लहू बहने लगा था।

पद्मिनी ने बड़ी फुर्ती से ब्रेक लगाए गाड़ी चिर-मिराकर रुक गई···उसका दिल बहुत जोर-से धड़क उठा था···चेहरा एका-एक सफेद पड़ गया था। दूसरे राहगीरों ने बूढ़े को घेरे में ले लिया था और ट्रैफिक कांस्टेबल सीटी बजाता हुआ झपटकर पद्मिनी की कार के पास आ गया था। उसने नोटबुक निकालकर कहा—

'मेम साहब, अपना लायसेंस दिखाओ।'

शेष पृष्ठ २८ पर

भारत-पाक क्रिकेट श्रृंखला 1979-80

भारत श्रृंखला २-० से जीता। गावस्कर व तस्लीम आरिफ क्रमश: भारत तथा पाक की ओर से बैटिंग औसत में आगे रहे। कपिल देव के लिए यह श्रृंखला महत्वपूर्ण रही। उन्होंने १०० विकेटों तथा १००० रनों का लक्ष्य प्राप्त किया। उन्होंने दो विश्व रिकार्ड भी स्थापित किये। एक वर्ष में सर्वाधिक टैस्ट विकेट लेने का तथा १०० विकेट व १००० रनों के डबल को पूरा करने वाले सबसे कम उम्र के क्रिकेटर बनकर। गावस्कर ने २३वां शतक लगाया। अब विश्व में वे शतकों की गणना में तीसरे नम्बर पर हैं केवल डॉन ब्रैडमैन तथा गैरी सोबर्स से पीछे—

भारत: बैटिंग	टैस्ट	इनिंग्स	नॉट आउट	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	औसत
सुनील गावस्कर	६	११	१	५२९	१६६	१	२	५२.९०
दिलीप वेंगसरकर	५	८	२	३१६	१४६*	१	१	५२.६६
यशपाल शर्मा	६	९	१	३१४	६२	०	३	३९.२५
सनदीप पाटिल	२	३	०	१०८	६२	०	१	३६.००
कपिल देव	६	९	०	२७८	८४	०	२	३०.८८
गुनडप्पा विश्वनाथ	६	१०	१	२२८	७३	०	१	२५.३३
करसन घावरी	६	८	२	१३८	४५*	०	०	२३.००
चेतन चौहान	६	११	१	२२६	६१	०	१	२२.६०
शिवलाल यादव	५	७	३	८१	२९*	०	०	२०.२५
सैयद किरमानी	६	९	१	१४८	३७	०	०	१८.५०
रोजर बिन्नी	६	९	१	१४३	४६*	०	०	१७.८७
दिलीप दोशी	६	८	१	५८	२०	०	०	८.२८

बॉलिंग	ओवर	मेडिन	रन	विकेट	औसत	उत्तम
कपिल देव	२११.५	५३	५६६	३२	१७.६८	७/५६
दिलीप दोशी	२५१.२	७८	५०४	१८	२८.००	३/४२
रोजर बिन्नी	१२०.५	१८	३९९	११	३६.२७	३/५३
करसन घावरी	१८१.३	३२	६१७	१५	४१.१२	४/६३
शिवलाल यादव	११८.४	१७	३४२	८	४२.७५	३/११
सुनील गावस्कर	१	०	८	०	—	—
विश्वनाथ	३	१	६	०	—	—

पाकिस्तान: बैटिंग	टैस्ट	इनिंग्स	नॉट आउट	रन	उच्चतम स्कोर	शतक	अर्द्ध शतक	औसत
तसलीम आरिफ	१	२	०	१३६	९०	०	१	६८.००
वसीम राजा	६	१०	२	४५०	९७	०	५	५६.२५
जावेद मियांदाद	६	११	१	४२१	७६	०	४	४२.१०
आसिफ इकबाल	६	१०	१	२६७	६४	०	२	२९.६६
मुदस्सर नजर	५	९	०	२३१	१२६	१	०	२५.६६
इमरान खान	५	८	१	१५४	३४	०	०	२२.००
सादिक मुहम्मद	३	५	०	१०६	४७	०	०	२१.२०
माजीद खान	६	११	०	२२३	५६	०	२	२०.२७
जहीर अब्बास	५	९	१	१५७	५०	०	१	१९.६२
अब्दुल कादिर	३	५	१	७२	२९*	०	०	१८.००
वासिम बारी	६	९	२	१७२	४९*	०	०	१६.७१
इकबाल कासिम	६	८	२	८८	३२	०	०	१४.६६
सिकन्दर बख्त	५	७	२	१८	६	०	०	३.६०
एहतशामुद्दीन	२	१	०	२	२	०	०	२.००

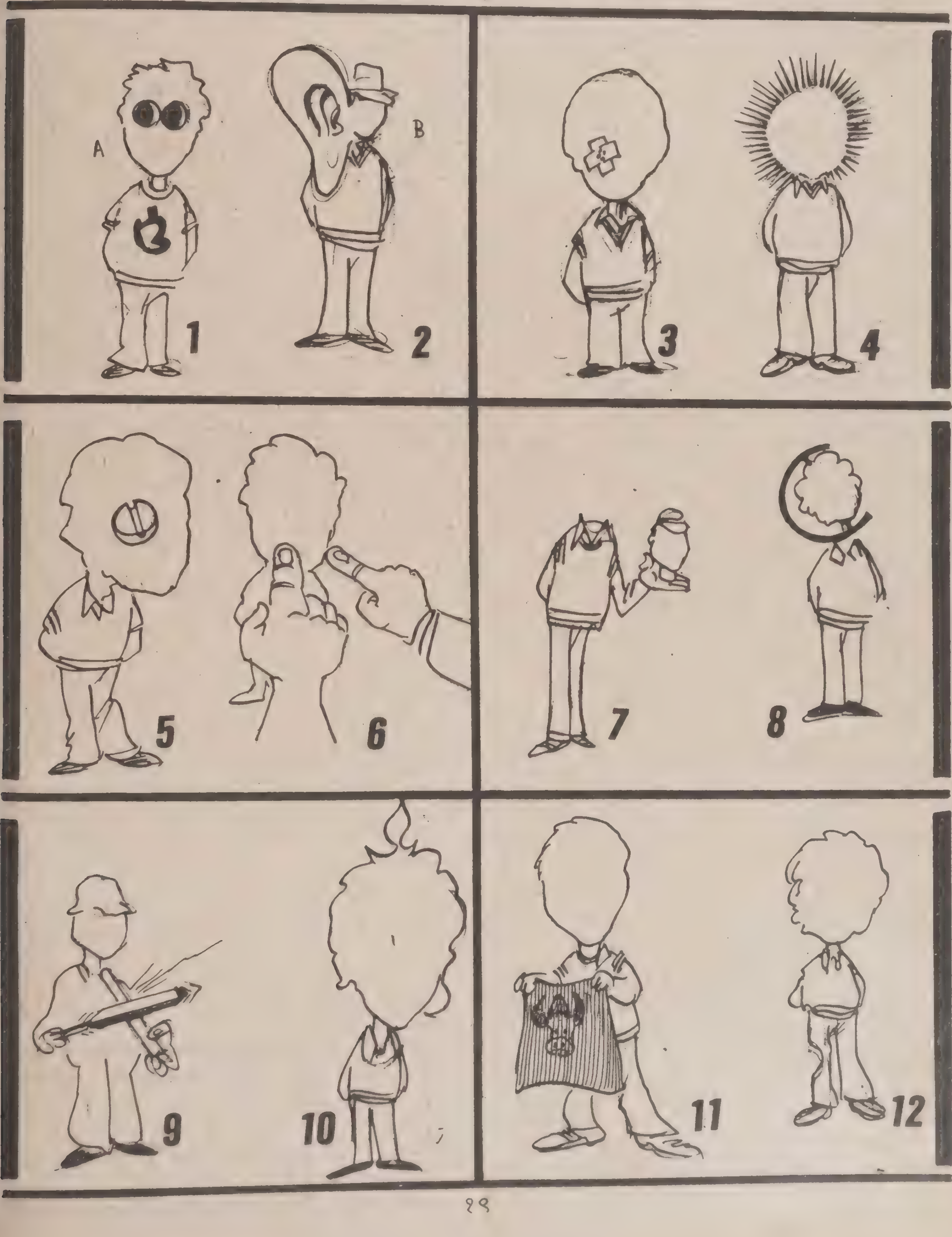
बॉलिंग	ओवर	मेडिन	रन	विकेट	औसत	उत्तम
इमरान खान	१५२.२	४२	३६५	१९	१९.२१	५/६३
एहतशामुद्दीन	१२४.४	३४	२७०	१४	१९.२८	५/४७
सिकन्दर बख्त	२११.३	४७	६४१	२४	२६.७०	८/६९
इकबाल कासिम	२४१.५	८०	५४८	१७	३२.२३	५/४०
आसिफ इकबाल	३६.२	१५	७२	२	३६.००	१/३
माजीद खान	७१	२१	१८१	३	६०.३३	३/५५
मुदस्सर नजर	३८	२०	२०५	३	६८.३३	
अब्दुल कादिर	६०	१७	१७३	२	८६.५०	१/२७
वसीम राजा	२३	५	८८	१	८८.००	१/२५

* आउट नहीं हुए

क्रिककोड पहेली

नीचे भारतीय टैस्ट क्रिकेटरों के रेखा चित्र क्रिककोड में खींचे गये हैं अर्थात क्रिकेटरों के चेहरे का रेखांकन नहीं है केवल एक संकेत चित्रित है। आप संकेत के सहारे बताइए कि ये कौन-कौन क्रिकेटर हैं। क्रिककोड के लिए खिलाड़ी के नाम का एक भाग लेकर उसे संकेत में बदला गया है। उदाहरण के लिए ए चित्र लें आंखों के स्थान पर गड्ढे हैं, यह चौहान ही हो सकते हैं। पृथ्वीराज चौहान की आंखें निकाल दी गयी थीं उसी तरह B चित्र में कान विशेष रूप से खींचा गया है अर्थात इस क्रिकेटर के नाम में कान से सम्बन्धित कोई शब्द है यानि सुनील गावस्कर। उसी तरह दूसरे के नामों के साथ माथापच्ची कर दिखाइये।

सही उत्तर पृष्ठ २० पर छपे हैं—





एस० एम० आलमगीर—हजारीबाग : गरीब चन्द जी, क्या आप बता सकते हैं कि इन्सान के लिए दुनिया में सबसे अच्छा काम क्या है ?

उ० : सबसे अच्छा काम करने की आपकी गाड़ी निकल गयी है। दुनिया की जनसंख्या वृद्धि की भयानक समस्या देखते हुए आज सबसे बड़ा काम यही होता कि आप पैदा होने का कष्ट ही न करते।

चन्द्रभान 'अनाड़ी'—जबलपुर : गरीब चन्द जी, मैंने सुना है आपका दिमाग किराये की खोपड़ी में रहता है, क्या यह सच है ?

उ० : आपने ठीक ही सुना है। आपकी खोपड़ी खाली पड़ी थी तो मैं किराये पर आ गया।

गुरुमुख सिंह सालूजा 'चंचल'—शंकर वार्ड, मुंगेल : सडक पर आ रही लड़की को रोकने के लिए मैं एक चूहा पालना चाहता हूं, सोचता हूँ कि आप जैसा बुद्धिमान चूहा तो मुझे पूरे विश्व में नहीं मिलेगा। अतः आप तुरंत मेरे यहां आ जाइये ? कहो तो आने का खर्चा मनीआर्डर द्वारा भेज दूं ?

उ० : आपको सस्ता तरीका बताता हूं। आप ट्रैफिक पुलिस मैन भर्ती हो जाइये। इसके बाद जिसे मर्जी रोकते रहिये।

दामोदर अनिल—रायपुर : हम दोनों एक दूसरे को चाहते हैं, पर अन्य लड़के जलते हैं क्या करें ?

उ० : अगर जलने वाले नहीं होंगे तो आप दोनों के प्यार की दुनिया में अंधेरा छा जायेगा। बगैर जलने वालों के प्यार ऐसे ही सूना है जैसे बगैर कुत्तों के हड्डी का टुकड़ा।

गुरदास परचानी—बरेली : 'खोदा पहाड़ निकली चुहिया'। वो चुहिया आपकी कौन लगती है ?

उ० : सवाल का जवाब तब मिलेगा जब फीस के रूप में झूमका गिरा रे बरेली के बाजार में वाला झुमका ढूंढ़ कर आप मुझे पेश करेंगे।

बलीराम धर्मानी—रायपुर : गरीब चन्द जी, हमारे घर में बहुत सी चूहिया हैं। क्या आप किसी एक के साथ शादी करेंगे ?

उ० : आप उनकी फोटो भेज दीजिये। कोई जंच गयी तो देख लेंगे।

असलम अली—बम्बई : गरीब चन्द जी, यह बताने का कष्ट करें कि किसकी दुलत्ती ज्यादा जोरदार होती है गधे की या घोड़े की ?

उ० : इस सवाल के जवाब का पता तो मुझे नहीं, आपको हो तो कहिये, क्योंकि गधे व घोड़े दोनों की दुलत्तियां मेरे तो सिर के ऊपर से ही निकल जाती हैं।

सुनील कुमार गगिया—गांधीधाम : आप कौन सी भाषा के हैं ?

उ० : मैं सभी भाषाओं की पुस्तकें तार-तार कर देता हूं।

अनिल शर्मा उर्फ बिल्लु : गरीब चन्द जी, कभी तुमने किसी से प्यार किया है, प्यार भरा दिल कभी किसी को दिया है ?

उ० : प्यार से रिटायर होकर ही तो प्रश्नों के उत्तर दे रहा हूँ।



अभय कुमार बड़कुल—बीना : जब कोई हसीना गुस्से में बुलाये तो क्या करना चाहिए ?

उ० : सिर के बल चलकर जाना चाहिए। सैंडिल बजेंगे तो पैर पर ही। सिर तो बच जायेगा।

मुकेश भटनागर 'भावुक'—किला चित्तौड़गढ़ : गरीब चन्द जी, मैं तो 'भावुक' हूँ लेकिन मेरी प्रेमिका बहुत चंचल स्वभाव की है, मैं उससे बहुत प्यार करता हूँ, आप कहिए मैं क्या करूं ?

उ० : आप तो भावुक हैं। आप क्या करेंगे ? जो कुछ करना होगा वही करवा लेगी।

प्रेमसिंह रावत—पटियाला : यदि गरीब चन्द जी आपको भारत का प्रधान मन्त्री बना दिया जाये तो आपका पहला कार्य क्या होगा ?

उ० : मैं हल्दी के प्रयोग पर बैन लगा दूंगा। इससे हल्दी बच जायेगी सभी चूहों को हल्दी की गांठें मिल जायेंगी और वह सब पंसारी बन जायेंगे।

मोहन चन्द पाठक—पिथौरागढ़ : माई डीयर गरीब चन्द, मैंने 'दीवाना' पढ़कर अलमारी में रख दिया, कुछ दिनों बाद मैंने जब वह 'दीवाना' अलमारी से निकाला तो देखने पर पता लगा कि 'गरीब चन्द की डाक' वाला पूरा पृष्ठ गायब है। ऐसा क्यों ? तुम्हारी बिरादरी वालों का यह चक्कर कब तक चलेगा ?

उ० : यह चक्कर तो तब तक चलेगा जब तक धरती चक्कर लगाती रहेगी। इसे रैट रेस कहते हैं यानि चूहा दौड़। पीछे वाला आगे वाले का पत्ता साफ करने की कोशिश करता है ताकि वह आगे हो जाये। शायद मेरी बिरादरी वाले दीवाने के मेरे उत्तरों वाले पृष्ठ कुतर कर पत्रों के उत्तर देने की कला में पेट की सफाई करने में लगे हैं ताकि वक्त आने पर वह मेरा पत्ता काट सकें।

गुड्डी पापा—नवाब गंज, दिल्ली : गरीब चाचा आजकल के जमाने में किस प्रकार की लड़की से शादी करनी चाहिए ?

उ० : कोई फर्क नहीं पड़ता नाटी हो या पतली। हां रकम साथ में होनी चाहिए।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : प्यारे गरीब चन्द, कर दो मेरा छोटा सा इक काम अपनी कुर्सी मुझे दे दे, ले ले चाहे जितना दाम।

उ० : मेरी छोटी सी कुर्सी लेकर आप क्या करेंगे ? इतनी छोटी सी है कि बैठने की कोशिश करोगे तो गिर पड़ोगे।

प्रमोद कुमार श्रीवास्तव—सहारनपुर : आप से सिलबिल-पिलपिल की दोस्ती कब हुई।

उ० : रात को दस बजकर अट्ठाइस मिनट तेरह सैकिण्ड पर।

क्रिककोड पहेली के सही उत्तर

१. चेतन चौहान, २. सुनील गावस्कर, ३. करसन (घावरी), ४. (यश) पाल शर्मा, ५. क-(पिल)-देव, ६. दिलीप (दोषी), ७. दिलीप वेंग (सर्‌कर), ८. (विश्व) नाथ, ९. (किर) मानी, १०. (सं) दीप पाटिल, ११. शिव (लाल) यादव और १२. रोजर (बिन्नी-यानि बिननी कनी)।

गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुर शाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२


फैण्टम - जंगल शहर
मुन्ना होने से तुम बहुत खुश हो ना।
हां, मैं मुन्ने को अपने पूर्वजों की बहादुरी और खोपड़ियों की गुफा की बातें बताने का इन्तजार नहीं कर सकता।
और उसे जंगल की शिक्षा दूंगा जैसे मेरे पिता ने मुझे दी थी।
डियाना तुम मुस्करा क्यों रही हो?
अगर लड़की हो गयी तो...?
?!
हमारा बच्चा... एक मुन्नी?
हो सकता है, लोगों के लड़की भी तो होती हैं।
कुछ भी हो सकता है लड़का या लड़की।
हो सकता है, यह तो मैंने सोचा नहीं।
लड़का हो या लड़की मगर होगा तो हमारा ही
कितने खुश नजर आ रहे हैं।
हां, अब तो मुझे उसकी पोशाक भी अच्छी लगने लगी है।
FALK & BARRY 1/4
मैं सोचता हूं यह अन्दर ही रहे तो ठीक है
ठीक है।
AIR FREIGHT
अन्दर जाओ
AIR FREIGHT
मैं यह विश्वास कर लेना चाहता हूं कि बाद में इसके साथ अच्छा बर्ताव करेंगे।
क्या ही अच्छा होता कि मैं भी उसमें पूरी आ जाती और साथ ही चलती
AIR FREIGHT
FALK & BARRY 1/5
चिन्ता मत कीजिए साहब, हम उसका विशेष ध्यान रखेंगे।
ठीक है, यह मेरा बहुत कीमती सामान है।
मि० वाकर* यात्रियों के चढ़ने का समय हो गया
FRAGILE
*चलते-फिरते भूत के लिये।
अलविदा डियाना, तुम अपनी और मुन्ना,.... मुन्नी की देखभाल अच्छी तरह करना।
ओह प्रियतम।
?
मैं अलविदा कैसे कहूं, मैं तुम्हारे
चाहती हूं।
?


मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूं, मगर जाना मुश्किल है ।
तुम्हें जहाज पर चढ़ते ही पछतावा होगा । बेहतर है यहाँ रहकर पहले तुम अपना काम खत्म कर लो ।
फिर हम दोनों तुम्हारे प्रोग्राम के अनुसार एक साथ होंगे । मुझे पत्र लिखना ···बन्दर डाक मेरे पास पहुंचा देंगे ।
·बन्दर डाक । अब यही मेरा आसरा रहेगा ।
रुको !
?
एक बार फिर—। गुड बाई
—प्रिय डियाना ।
वह आदमी बड़ा भाग्य शाली है ।
शक्रिया । पर उससे कहो ज्यादा भाग्यशाली मैं हूं ।
एक बार फिर···।
प्रिय··· डियाना···।
ओह ! अंकल डेव वह चला गया, मुझे बहुत बुरा लग रहा है । काश ! मैं उसके साथ होती ।
शेक्सपीयर ने ठीक ही कहा है कि जुदाई कितना मीठा गम है ।
डेविल चलो !
MAWITAAN, BANGALLA
हीरो तुम हमें बहुत याद आये ।
इसको तुम भी बहुत याद आये ऐ चलते- फिरते भूत ।
हम बच्चे के मां- बाप बनेंगे ।
वह अपनी जानी-पहचानी दुनिया में वापस, मगर पता नहीं आज क्यों कुछ फर्क लग रहा है ।


जहरीले लोगों से सुरक्षित घने जंगल की सीमा ।
गुप्त रास्ते से आगे बढ़ता हुआ
अंकल वाकर घर आ गया ।
चलते-फिरते भूत के लिए ।
डियाना का क्या हाल है?
क्या वह यहाँ आयेगी ?
वह ठीक है और जल्दी ही यहां आयेगी
मुझे माफ करो, मुझे एक जरूरी काम करना है
मेरे बीसों आदरणीय पूर्वजों···मुझे एक आवश्यक सूचना देनी है
फैण्टम की गुफा···।
आदरणीय पूर्वजों···मैं अपनी पत्नी की तरक्की की एक रिपोर्ट देनी चाहता हूं ।
फैण्टम की गुफा···जहां उसके बीसों पूर्वज दफनाये हुए हैं ।
अगर हम खुश किस्मत होंगे तो वह हमें हमारा बाईसवां उत्तराधिकारी दे देगी ।
उत्तराधिकारी क्या होता है ?
रैक्स, बन्दर कहीं के··· क्या तुमने सारी बात सुन ली ।
हां, अंकल वाकर, मुझे नहीं पता था कि यह भेद की बात है । हमारे सिवाय और कोई नहीं है यहां ।
तुम अपने पूर्वजों को अपने उत्तराधिकारी के विषय में बता रहे थे···।
उत्तराधिकारी एक बच्चा है ।
डियाना के बच्चा होगा,
होगा, मगर अभी इस बात को गुप्त रहने दो ।

क्रमशः



सिलबिल पिलपिल
और
हिममानव
येति
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल पिलपिल येति को पकड़ कर उससे नाम व पैसा कमाने के लिये सिक्किम जाते हैं । उनकी योजना है कि येति को पकड़ कर वे वैज्ञानिकों या दुनिया के चिड़िया-घरों से मुंह मांगा दाम पा सकते हैं । सिक्किम पहुंच कर अंतिम पड़ाव वे डुम चेक गुम्पा के लामाओं के पास डालते हैं और दूसरी सुबह उस बर्फानी पहाड़ी पर जा पहुंचते हैं जहां येति के देखे जाने की अफवाह है। उससे आगे—
अब हम उस जगे पहुंच गये हैं जहां म्हारी किस्मत का फैसला होगा इसलिए बातें कम और काम जादा । अपने चारों तरफ तेज नजर रखना ।
थम फिकर मत करो भाई जी, रात मैंने रेती से अपनी आंखों में सरमा डाला था ।
ओये कनखजूरे की दुम, वह देख क्या है ? मिल गया हमको सबूत । येति के पांव का निशान ।
यह येति के पांव का निशान है ? इतना बड़ा पांव है उसका । भाई जी एक बात थमारे दिमाग में आई कि नहीं ? जब उसके पांव का साइज इतना बड़ा है तो वह जूता भी चालीस या पचास नम्बर का पहनता होगा । अगर वह हमारी खातिरदारी करे तो हमारा क्या हाल होगा ?
यहीं कहीं पास में ही उसकी गुफा होगी । ये पांव के निशान अकेले उसके हैं इसका मतलब यह है कि वह भी म्हारी तरह छड़ा है ।
इससे तो हमारे लिए आसानी हो गयी । हम उसको बतायेंगे कि हम उसे ऑल इण्डिया छड़ा यूनियन का मेम्बर बनाने आये हैं ।
ठहरो ।
जरा गौर से देख ! पांव के निशान ऊपर पहाड़ी की ओर जाते हैं और उस चट्टान से आगे पांव के निशान नहीं हैं । सपाट बर्फ है । जहां पांव के निशान खत्म होते हैं वहां आगे पहाड़ अन्दर की ओर झुका हुआ है और एक गुफा सी नजर आती है । यकीनन यही उसका घर होना चाहिए ।
आस-पास कोई लौंडा भी नजर नहीं आता वरना पूछ ही लेते कि मिस्टर येति का फ्लैट यही है ।
सिलबिल, अब तू आगे चल । हम अपनी मंजिल पर पहुंच ही गये हैं । तू मेरे से छोटा है न । मैं तेरे पीछे रहूंगा । यही दुनिया का दस्तूर है । छोटी डेट बड़ी डेट से आगे आती है । मई जून से पहले है । मैं तेरी पीठ का ख्याल रखूंगा उस पर कोई आंच नहीं आयेगी ।
नहीं भाई जी, आप आगे चलो । बालों वाले हमेशा गंजे आदमी के पीछे रहते हैं । तुलसी दास जी ने कहा भी है कि अफसर की अगाड़ी और घोड़े की पिछाड़ी नहीं चलना चाहिए ।



याड़ी तू मुस्करा क्यों नहीं रिया है ? इतने बरसों बाद यार मिला लेकिन तू खुश नहीं है ? दाढ़ में दर्द तो नहीं है । तेरी आंखें लाल क्यों हैं । रात को भगवती मां के जागरण में जागता तो नहीं रहा ? कुछ तो बोले मेरे यार ।
तेरा मूड ठीक नहीं है ? तो कोई बात नहीं मैं हंसाता हूं तुझे । तुझे तो बचपन से जानता हूं मैं ! तेरी रग-रग से वाकिफ हूं । मैं तुझे बीते दिनों की बीती यादें याद दिलाता हूं । किसी को हंसाने के लिए बीते जमाने की खट्टी मीठी यादें याद दिलाना चाहिए । मुहम्मद अली ने भी यही कहा था ।
बेटे याद है वह दिन जब मैं एक बार कद्दू लेकर घर आया था तूने पूछा था यह क्या है तो मैंने बताया था कि हाथी का अंडा है । और तू सचमुच ही उसका आमलेट बनाने की दिन भर कोशिश करता रहा ।
और याद है वह किस्सा जब दादा जी ने आलू बुखारा लाने के लिए कहा तो तूने डाक्टर से हैजे का इन्जेक्शन लगवाया था जब बुखार चढ़ा तो जाकर बाजार से आलू खरीद लाया था ! हो हो हो हो हो !
और उस बार तो मजा ही आ गया जब इम्तहान के दिनों में मास्टर जी ने जम कर पढ़ने के लिए कहा तो तू फ्रिज में बैठ कर हिस्ट्री का रट्टा लगाने लगा था ।
चौंटा!
बदमाश । शैतान कहीं का, अब भी नहीं हंसेगा ? मैं तेरे कान खींचूंगा । फिर भी नहीं हंसेगा तो चपेड़ मारूंगा, उल्लू कहीं का ।
इतना बड़ा हो गया ! अब तक रुठने की आदत नहीं गयी ?
नहीं हंसेगा । तेरी बगल में करूं गुदगुदी ? ही-ही करके हंसेगा । नटखट हो गया है।
एक-एक को खा जाऊंगा ! बहुत गुस्सा दिलाया है । बड़ा बेहूदा जानवर है यह इंसान ।
भागो जमीन पर लेट जाओ । पाकिस्तान के साथ लड़ाई शुरू हो गई है । हवाई हमले का सायरन बज रहा है । खिड़कियों पर काले पर्दे चढ़ाओ ।
भाई जी पाकिस्तान के साथ लड़ाई अभी शुरू नहीं हुई । थमारा बचपन का यार अपने पेट के प्रैशर कुकर से सीटी की आवाज निकाल रहा है । डिनर का प्रोग्राम बन रिया है ।
EEEEEEYAAAA
अगले अंक में पढ़िये येति ने सिलबिल-पिलपिल का क्या किया ।

पृष्ठ १७ का शेष भाग

पद्मिनी कार से उतरती हुई बोली—

'लायसेंस देख लेना···मैं भागी नहीं जा रही···पहले घायल को देखो।'

बूढ़े घायल राहगीर के गिर्द खड़े आदमी पद्मिनी को कोस रहे थे—

'नजर नहीं आता क्या ?'

'गाड़ी में बैठकर अंधे हो जाते हैं लोग।'

'सड़क को अपने बाप की जागीर समझ लेते हैं।'

'हां-हां बाबा···' पद्मिनी भीड़ को चीरती हुई अंदर घुसती हुई बोली, 'दोष मेरा ही था···मैं बहुत जल्दी में थी।'

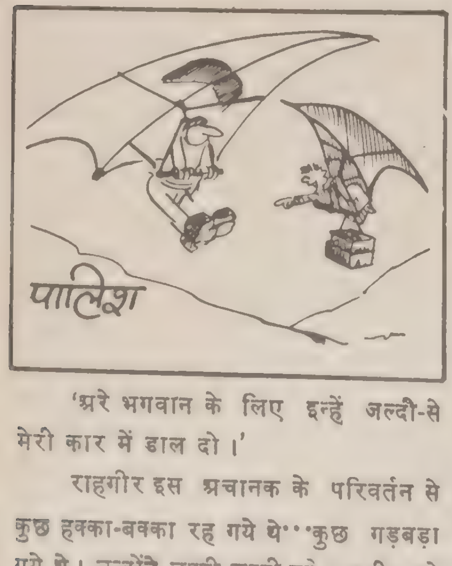
'और अगर इस बेचारे की जान ही चली जाती तो···?' किसी ने कहा।

'मैं सजा भुगत लेती···।' पद्मिनी ने झल्लाकर कहा, तुम लोग सहानुभूति तो बहुत जता रहे हो लेकिन कोई इतना नहीं करता कि इस गरीब को उठाकर किसी टैक्सी ही में डालकर हस्पताल ले जाता।' फिर उसने कांस्टेबल की ओर देखकर झटके से कहा, 'तुम तो मेरे पीछे ऐसे पड़ गए हो जैसे मैं डाका मारकर या कत्ल करके भाग रही हूं खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो—भीड़ को हटाओ जल्दी से।'

कांस्टेबल बोखलाकर जल्दी जल्दी भीड़ को पीछे धकेलने लगा। पद्मिनी ने ज़मीन पर बैठकर राहगीर को सीधा किया···और दूसरे ही क्षण उसे यूं अनुभव हुआ जैसे कोई भारी-सी चीज उसके माथे से टकरा गई हो···उसका पूरा बदन कांपकर रह गया था···वह बूढ़े का चेहरा हाथ में लेकर पागलों की भांति चिल्लाई—

'मामा···मामा···हे भगवान् ! यह क्या हो गया तुम्हें ?'

एकाएक उसका बदन थरथर कांपने लगा था···आंखों से आंसू उबल पड़े थे··· वह बड़ी घबराई हुई भीड़ की ओर देखकर बोली—



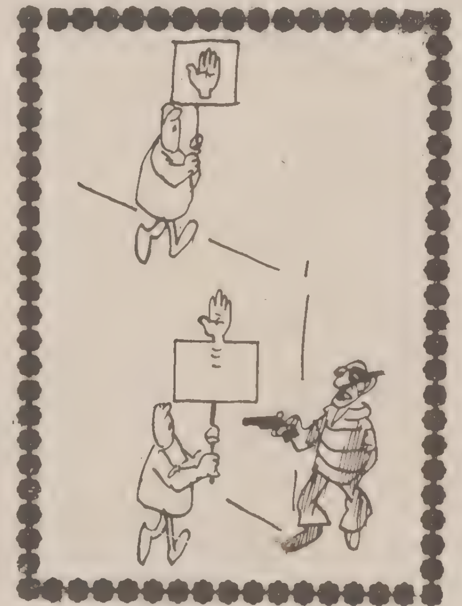
'अरे भगवान के लिए इन्हें जल्दी-से मेरी कार में डाल दो।'

राहगीर इस अचानक के परिवर्तन से कुछ हक्का-बक्का रह गये थे···कुछ गड़बड़ा गये थे। उन्होंने जल्दी-जल्दी बूढ़े राहगीर को सड़क पर से उठाया और पद्मिनी की कार में डाल दिया।

पद्मिनी बड़ी बेचैनी से वार्ड के बाहर टहल रही थी···उसकी आंखों से गहरी बेचैनी और घबराहट टपक रही थी। बार-बार दृष्टि वार्ड के दरवाजे की ओर जाती थी और फिर वह पलटकर हस्पताल के फाटक की ओर देखने लगती थी।

अचानक सेठ साहब की कार हस्पताल में दाखिल होकर बरामदे के पास आकर रुक गई। पद्मिनी ठिठक गई। सेठ साहब जल्दी से कार से उतरे और बरामदे की ओर लपके···पद्मिनी को देखकर उन्होंने सन्तोष की सांस ली और बोले—

'हे भगवान् ! तेरा लाख-लाख शुक्र है···बेटी, तूने तो मुझे डरा ही दिया था··· मेरे हाथ-पैर फूल गये थे टेलीफोन पर तेरी आवाज सुनकर।'



'डैडी—!' पद्मिनी ने भारी आवाज में कहा, मैंने मां के कारण फोन पर नहीं बताया था।'

'लेकिन बात क्या है बेटी ? तेरा चेहरा क्यों उतरा हुआ है ?'

'डैडी—मेरे मामा ·।'

'मामा···!' सेठ साहब उछल पड़े, 'कौन से मामा ?'

डैडी···मेरे यशपाल मामा जिंदा हैं।'

'क्या ? सेठ साहब की आंखें आश्चर्य से फटी रह गयीं।

'हां डैडी···अभी-अभी मेरी कार से उनका एक्सीडेंट हो गया है—मैंने उन्हें पहचान लिया है। उनके सिर में गहरी चोट आई है—इस समय वह स्पेशल वार्ड में हैं।'

'ओहो—।' सेठ साहब ने धीरे से कहा।

'डैडी···भगवान करे मेरे मामा ठीक हो जायें डैडी···मेरे मामा भी मेरी शादी वाले दिन गांव ही में थे—अगर मामा जिंदा हैं तो हो सकता है कि मां और बापू भी हों।' बोलते-बोलते पद्मिनी की आवाज भर्रा गई।

'हां हां बेटी···' सेठ साहब ने पद्मिनी के सिर पर हाथ फेर कर कहा, 'चिंता मत



करो बेटी···शायद भगवान् की यही इच्छा हो···वह लोग भी जिंदा हों।'

इतने में एक डाक्टर बाहर निकला—पद्मिनी ने जल्दी से आंसू पोंछकर डाक्टर की ओर बढ़कर बेचैनी से पूछा—

'डाक्टर ! कैसे हैं मेरे मामा ?'

'डाक्टर···' सेठ साहब ने कहा, 'इन्हें किसी प्रकार बचा लो···खर्चे की चिंता मत करो।'

'घबराइए मत सेठ साहब' डाक्टर मुस्करा कर बोला, 'घायल बिल्कुल ठीक है···खतरे की कोई बात नहीं···सिर का घाव बहुत साधारण है—बेहोश तो वह अचानक धक्का लगने से हो गए थे—।'

'हे भगवान् ! तेरा लाख-लाख शुक्र है···' पद्मिनी ने जल्दी से कहा, 'डाक्टर साहब ! हम उनसे मिल सकते हैं !'

'हां हां···क्यों नहीं···वह पूरी तरह होश में हैं···बैंडेज कर दी गई है—बस उन्हें दो दिन आराम के लिए यहां रखना पड़ेगा।'

पद्मिनी जल्दी से बेचैन होकर वार्ड की ओर बढ़ी···उसके पीछे-पीछे सेठ साहब भी अन्दर आ गए। यशपाल बिस्तर पर तकिए का सहारा लिए आधे लेटे हुए थे··· उनके माथे पर पट्टी बंधी हुई थी—पद्मिनी चारपाई से थोड़ी दूर ठिठक कर रुक गई। यशपाल ने सेठ साहब और पद्मिनी को ध्यानपूर्वक देखा। पास खड़ी नर्स ने कहा—

'इसी लड़की की कार से आपका एक्सीडेण्ट हुआ था।'

'ओह···'यशपाल बैठकर मुस्कराते हुए बोले, 'आओ···आओ बेटी···घबराने की क्या बात है ? मैं बिल्कुल ठीक हूं···एक्सीडेण्ट तो हो ही जाते हैं···तुम चिन्ता मत


योह के चक्कर है समझ में नाहीं आया। येति जी की गुफा के दरवाजे पर गोदरेज का लॉक लगा हुआ है और फिलिप्स का कॉलबेल लगा हुआ है ?
जमाना बोत तरक्की कर गया है। तरक्की की हवा यहां तक भी पहुंच गयी होगी।
मैं तो पहले ही कह रिया था कि हमें खाली हाथ नहीं आना चाहिए था। अब कौन सा मुँह दिखायेंगे हम येति को ?
जौन सा मुँह थारे पास है इसी के काम चलाना पड़ेगा इब।
अगर हमें पहले पता होता कि सिबिलाइजेशन यहां तक घुसपैठ कर गया है तो येति साहब के लिए हम चांदनी चौक से कोट और पेंट पीस ले आते। घंटाघर के हलवाई से कराची हलुवा ले आते। खैर मैं घण्टी बजाता हूं। थम दो चौकन्ने हो जाओगे।
IN
ऐह। ऊयेर !! हूंह !!! यह-यह मेरी पीठ के पीछे कौन आकर खड़ा हो गिया ? कद ग्यारह फुट तीन इंच के लगभग, रंग काला-- छाती ९७ इंच, कमर ७० इंच और हिप्स ९८ इंच के आस पास···आंखें लाल, जिस्म पर घने बाल, उम्र चालीस साल, पिचके गाल और बौडम चाल, खुरदरी मोटी खाल···क्या होगा हमारा हल।
शSSSSSSSS ! भाई जी··· शSSSSSSS ! ममम मिम हानव···नहीं नहीं···निम दानव···क्या कहते हैं··· हिप-हिप मानव।
शऽ ऽ ऽ ! भाई जी जरा चुपके से म्हारी बात सुनो···हमारे पीछे खड़या है थारा चाचा।
इतनी देर से घण्टी बजा रिहा हूं लेकिन कोई जवाब ही नहीं दे रहा है।
मेरी बात समझने की कोशिश करो। मैं जोर से बोल नहीं सकता, मेरी जबान पर ताला लगा है। कैसे आऊं जमना के तीर, पाँव पड़ी जंजीर हो रामा पाँव पड़ी जंजीर ! कैद में है बुलबुल सय्याद मुस्कराये कहा भी न जाये चुप रहा भी न जाये···कैद में है बुलबुल। जरा मन की किवड़िया खोल सैय्या तेरे द्वारे खड़े हो सैय्या तोरे···द्वारे खड़े···टुरु रु रु रु।
नो रिप्लाई। घण्टी खराब तो नहीं है या बिजली चली गई है ?



क्यों मेरा दिमाग़ खाये जा रिया है ? पता नहीं क्या गिटपिट गिटपिट कर रिया है ? ऐन वक्त पर कुछ न कुछ विघ्न जरूर डालना होता है तुझे । एक तरफ तो मैं परेशान हू कि घण्टी का पता नहीं क्यों जवाब नहीं मिल रिया ऊपर से तू माथा चाट रिया है ।
SSSSSS ! जरा नजरें उठा कर देखो । मेरी पीठ के पीछे कौन खड़ा है ?
कौन है ?
देख लिया कऊन खड़या सै ? इब थारी ग्रांखें मिट्टी जैसी क्यों हो गयी ? पता लगया मैं गिटपिट क्यों कर रिया था ।
थारे होंठ हिल रहे हैं लेकिन ग्रावाज क्यों नहीं निकल रही है ? डबिंग करके ही डायलाग बता दो ।
क···क···क···क···कऊन है ?
छोटे भाई, इब म्हारा आखिरी वक्त ग्रा गया । हम मरने परदेस में कहां चले आये ? अपने रिश्तेदारों ग्रौर घर से दूर मजबूर ।
हाय ! मरने से पहले हम अपनी बागड़ी भैंस का दूध भी न पी सकेंगे ।
ठहरो ! ठहरो !! ठहरो !!! इस तरह हिम्मत हारने से काम कैसे चलेगा ? मरना ही है तो पीपी करके क्यों मरें ? लड़कर क्यों न मरें ? हमने कितने चोर-डाकुग्रों को ठिकाने लगा दिया । यह किस खेत की मूली है ?
किस खेत की मूली है यह ?
उसी खेत की होगी जिसमें हमने सरकारी खाद डलवाई थी । इतनी बड़ी मूली ग्रौर कहां हो सकती है ?
बेवकूफ हम इंसान हैं हमारे पास दिमाग है ।
ग्रह । भाई जी तमने ग्राज तक ती बताया नहीं कि थमारे पास दिमागहै । कहां छुपा के रखा था ?
ग्ररे, भोले लोगों यह येति तो ग्रपना ही यार है । हम दोनों बचपन में एक साथ ही स्कूल जाया करते थे । इससे मैं अपना बस्ता उठवाया करता था । शरारतें मैं करता था ग्रौर पिटता यह था । मेरे यार तू इतने साल कहां गायब रहा ? इसी गुफा में रहा !
नौकरी वगैरह कहीं लगी या नहीं ? नहीं लगी तो मैं लगवा दूंगा ।
ग्रपना यार शायद हमारे साथ फोटो खिचवाना चाहता है । तभी पोज बना कर खड़ा है । ले मैं इसके साथ पोज बनाकर खड़ा हो जाता हूं । तू फोटो खींच ।
ठहरो मैं भी साथ में खड़ा हो जाता हू, ग्रुप फोटो में पूरी टीम होनी चाहिए ।
फोटो कैसे खिचूं ? यह मुस्करा ही नहीं रहा है । इस्मायल प्लीज ।
पता नहीं क्या बात है बोल भी भी नहीं रिया है । शायद हम से नाराज है ।


आदिमानव
पता नहीं जालिम सिंह हमारे जंगल का क्या होगा ? आजकल की नयी युवा पीढ़ी बिल्कुल बिगड़ गयी है । बड़े-बूढ़ों की इज्जत नहीं करते, मनमानी करते हैं । जंगल में हमारे जमाने में जो अनुशासनहीनता थी वह भंग होने लगी है । हर कोई कानून और व्यवस्था की बात करने लगा है ।
कलयुग आ गया है भय्या
और क्या ?
यह सब कहते हैं कि अमरीका के जंगल से आई हवा का ही परिणाम है ।
हमने तो जैसे तैसे अपना जमाना गुजार दिया ! धत तेरे की निशाना चूक गया । भय्या जब दिल में रंज हो तो कोई काम ठीक से नहीं होता । दिमाग अपसैट रहता है । तुम्हें असली बात तो बताई नहीं ।
बात यह है, मेरा तो कलेजा भी कहते हुये फटता है । वह है न अपना लड़का मनोज, जानते हो वह भी अब हिप्पी बन गया है, बतेरा समझाया लेकिन किसी की सुनता ही नहीं ।
मनोज भी ?
सभी हिप्पी बनने पर तुल गये हैं, अपनी संस्कृति छोड़ दी । चाल-चलन छोड़ दिया । मैं तुम्हारे दिल का दर्द समझता हूं जंगली राम ।
अब चल कर तुम खुद ही तमाशा देख लेना कि मनोज ने अपना क्या हाल बना रखा है अभी भी वहां नीचे नदी के किनारे बैठा हिप्पी हरकतें कर रहा होगा ।
हरे राम ! हरे राम !!
देख लिया ? बाल कटा लिए ! रोज उनमें कंघी नाम की चीज चलाता रहता है पत्थर और चिकनी मिट्टी लेकर रोज जिस्म रगड़ कर साफ करता है । हम कभी नहाये पचास साल की उम्र में एक-दो बार से ज्यादा ? सुना है अमरीका के जंगल वाले लड़के तो बदन साफ कर उस पर फूलों का रस मलकर गंधवान बनाते हैं । दिन भर बैठा रहेगा और पॉप म्यूजिक सुनता है । पत्थर उठाकर पॉप से पानी में फेंकता है और उसके गिरने की आवाज पर उंगलियां चटकाता है ।
POP



...श भटनागर पुत्र श्री भारत भिंह भटनागर, मनजा माता मंदिर के पास भटनागर भवन, ...हला निलोदगढ़ (राजस्थान) १८ वर्ष, चित्र ...ना।



श्याम बाजपेयी ... ...ज़र (मण्डला) ... वर्ष, ... करना ... चुटकुले सुनना ...-मित्रता करना।



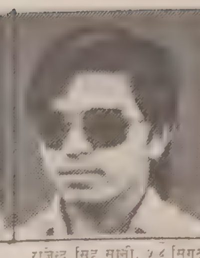
रवि कुमार बिष्ट ... यशपाल ... मिनारगंज, नैनीताल १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना फिल्म देखना साईकिल चलाना, पत्र-मित्रता करना।



गुलशन राय ... बिल्डिंग, जनक नगर, सहारन पुर, १६ वर्ष, नावल पढ़ना, ... करना दोस्त बनाना, दीवाना पढ़ना।



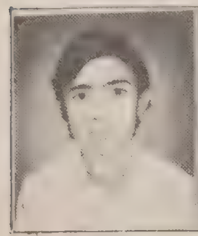
मोहम्मद नासिर, स्मार्ट टेलर्स टनकपुर रोड (खटीमा), १८ वर्ष, फिल्म देखना क्रिकेट खेलना कहानियां पढ़ना, और स्कूल की पढ़ाई करना।



राजेन्द्र सिंह सांखी, ७८ सिगड़ बाड़ियों की सहरी, (उदयपुर) २० वर्ष, टिकट संग्रह करना, लड़के लड़कियों से मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



नरिन्द्र सिंह ... कपूरथला, २८ वर्ष दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता फरमाइश भेजना, दीवाना पढ़कर लोगों को दीवाना बनाना।



ब्रजेन्द्र बहादुर सिन्हा द्वारा अमरेन्द्र बहादुर सिन्हा रूप-कला कुंज, मलमपुर (छपरा), १६ वर्ष, लड़के और लड़कियों से पत्र-मित्रता करना।



अब्दुल कलाम, अब्दुल कमाल C.O डकवाल शाप कीपर, मो० व्योपारीयान, फतहपुर, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।



अशोक कुमार मूलचन्दानी, अर्चना प्रेस के पास रावेर, न० रावेर, (जि०) जलगांव, १० वर्ष, दीवाना पढ़ना, दोस्ती करना, क्रिकेट खेलना।



धर्मेश कुमार गोयल, ८६६, गांधी नगर, मुरसान गेट, हाथरस-२०४१०१, १६ वर्ष, हर माहौल में ढल जाना, बेन्जो बजाना।



भास्कर राव, ग्राम चिलकर, (आनन्द), १०० महात्मा गांधी मार्ग, कुक्षी जि० धार (म० प्र०), २२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, कहानी लिखना।



रमण कुमार वी० वालानी, ३० ३ न्यू जी वार्ड कुबेर नगर, अहमदाबाद, २१ वर्ष, पत्र लिखना, फिल्म देखना, दीवाना पढ़ना।



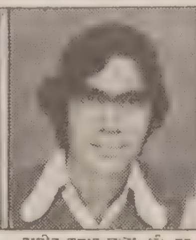
राम बहादुर लामा, C O, ना ... मानन्धर ५ ८४, ... टोल काठमाण्डु नेपाल, २० वर्ष, पत्र मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



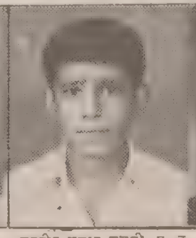
दीपक कुमार लाहिड़ी, बेजवाड़ कालोनी, बरौनी, बेगूसराय, बिहार, १८ वर्ष, नये लोगों से मित्रता करना, नयी चीज पढ़ना।



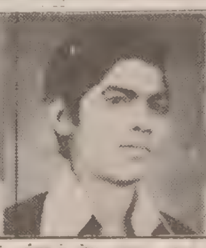
धर्मेन्द्र कलवानी जटाशंकर, गोरखपुर, १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, दीवाना के सदस्यों को खुश रहने की ईश्वर से प्रार्थना करना।



राजीव कुमार खन्ना, श्री गुरु शरण खन्ना, बजाजा लाईन रामनगर (नेपाल) २० वर्ष, पत्र-मित्रता करना, गरीबों से प्यार करना।



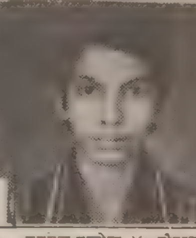
जगदीप कुमार कलसी, म न १२५० सुभाष रोड, गांधीनगर दिल्ली-३१ १३ वर्ष, क्रिकेट खेलना, किताबें पढ़ना, मित्रता करना, सत्य बोलना।



मंयक ... जैड मस्ताना, C O ... टेलर्स, ... बाजार, बीकानेर (राज०) १६ वर्ष, ख्वाब देखना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना।



प्रहलाद राय, श्यामलानी, सिन्धी कालोनी, भरथना, जिला इटावा; १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, क्रिकेट खेलना, दीवाना पढ़ना।



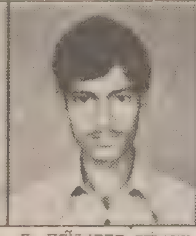
कमलेन्द्र मल्होत्रा, ४८ मोहल्ला हरदेव, सहाय, गाजियाबाद, १० वर्ष, कामेन्ट्री सुनना, लड़कियों से मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



देवेन्द्र कुमार, 'नराने' कक्षा नवमी, रा. उ. मा. शाला, डोंगरगढ़, शम्भूराम जी, नराने अनाज व किराना के व्यापारी १५ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



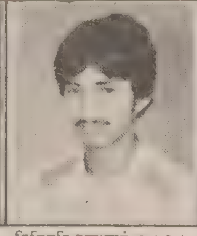
सुशील डेविड, स्टील टाउन, 'श्रीकर्णी (पी. जी.) मण्डी, गोविन्द गढ़-१ ८ ७ ३ ० १, १७ वर्ष, वो काम करना जिसमें किसीकी भी रुचि न हो



मु० खुर्शीद आलम हाई स्कूल रोड, पो० गिद्धिआम, १० वर्ष, अच्छे लड़कों से मित्रता करना, खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेना।



मो० शाहीद हुसैन, मु० मसे-मपुर वाद (पटना), १८ वर्ष, पढ़ना और बच्चों से प्यार करना, दीवाना पढ़ना, पत्र-मित्रता करना।



सिद्धिमुनि वज्राचार्य, २ ८ ३ ८ वटु, मवल, बाह्रान्ला, काठमाण्डू २२ वर्ष, विदेशी लोगों से पेन-फ्रेंड करना, सब लोगों से दोस्ती करना।



आनन्द खप्पा, नैनीताल, मन्वीवाल, २० वर्ष, फोटो खींचना और फोटो छपवाना, दीवाना पढ़ना, लोगों को हसाना।



ब्रह्मानन्द सिंगोरा, डब्ल्यू जैड २५५ जेल रोड, नागल राय, नई दिल्ली, १८ वर्ष, दीवाना पढ़ना, गीत सुनना, बैडमिंटन खेलना, क्रिकेट खेलना।



दुर्गा दत्त किराड़, रघुनाथ सर का मंदिर, बीकानेर (राज०), १३ वर्ष, दीवाना पढ़ना, पत्र-व्यवहार, रेडियो सुनना, गाना गाना।



विजय कुमार, हासवानी, ३०६ कंवर नगर, सिन्धी, कालोनी जलगांव-४२५००१ १५ वर्ष, जल्दी शादी करना एवं हसना-हसाना।



एस० जी० सादिक साबिर, जाहिद मंजिल, स्टेशन रोड, मुरादाबाद-२४४००१, २१ वर्ष पत्र-मित्रता करना, फ़िल्म हासिल करना।



दिनेश मंत्री रत्ना द्वितीय वर्ष, कालेज समरिया (राज०), १८ वर्ष, तैरना, कमजोर की सहायता करना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना।



भारत भूषण, दुकान न० २५, पुरानी मार्किट, मालवीय नगर नई दिल्ली २१ वर्ष, दीवाना पढ़ना, फिल्म देखना कोमेन्ट्री सुनना, गीत गाना।



प्रदीप कुमार, केशरी गेस्ट हाउस, नीचीबाग, वाराणसी, १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना पत्र-मित्रता करना, सिनेमा देखना, दीवाना पढ़ना।



चन्द्रलाल शर्मा, खाना पाड़ा, गोहाटी, (असम) १० वर्ष, पढ़ना और घूमना, दीवाना पढ़कर दीवाना बनना, लोगों को हसाना।



राजेन्द्र कुमार सोनी १८५, सुभाष मार्ग ... झाबुआ, १५ वर्ष, क्रिकेट खेलना, कविता ... ...



आशुतोष शर्मा, ग्राम व डाक-घर नादौन (हि० प्र०), १६ वर्ष क्रिकेट खेलना गाना गाना गज़लें सुनना; किताबें ...



... नारायण मादाना, श्री ... बालना, गोहाटी, १५ वर्ष, पतंग उड़ाना, दोस्त बनाना किताबें पढ़ना, गाना गाना।



...पंकज चिकारा, ११, अर्जन नगर, शाहदरा दिल्ली-५१ ... वर्ष, पत्र-मित्रता तथा क्रिकेट खेलना अपना गौरव समझना दीवाना पढ़ना।



अजय पाल सिंह, ११, अर्जन नगर, मलूक सिंह मार्ग, दिल्ली-५१ १२ वर्ष, दीवाना पढ़ना, शतरंज खेलना, हर प्रकार की विशेषता रखना।

हमारा पता: दीवाना फ्रेंडस क्लब
८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।

नाम ______

पता ______

आयु ______ शौक ______

दीवाना फ्रेंड्स क्लब

दीवाना फ्रेंड्स क्लब के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

... नया बाजार दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

करो'''अगर केस भी बन गया तो मैं अदालत में कह दूंगा कि दोष मेरा ही था।'

'मामा'''।' पद्मिनी की आवाज भर्रा गई और उसके दोनों हाथ फैल गए।

यशपाल अनायास उछल पड़े और आश्चर्य चकित आंखें फाड़ कर पद्मिनी को देखने लगे। पद्मिनी ने धीरे से कहा—

'आपने पहचाना नहीं मामा'''मैं''' आपकी मुन्नी हूं।'

'मुन्नी'''!!' यशपाल हड़बड़ा कर बोले, 'यह तुम क्या कह रही हो—मेरी भानजी मुन्नी तो बारात के साथ बाढ़ में बह गई थी।'

'हां मामा'''मैं बाढ़ में बह जरूर गई थी लेकिन इन्होंने मुझे बचा लिया था'''' पद्मिनी ने सेठ साहब की ओर संकेत करके भारी आवाज में कहा।

'नहीं नहीं, यह झूठ है'''मैं विश्वास नहीं कर सकता।' यशपाल की आवाज कांप रही थी।

'मामा'''' पद्मिनी ने फिर कहा, 'आप अपनी मुन्नी को नहीं पहचान सके'''मैंने तो आपको बेहोशी की हालत में भी पहचान लिया था'''याद करो'''मामा'''मैं वही मुन्नी हूं जिसका विवाह बचपन में करने का आपने विरोध किया था लेकिन बापू ने आपकी बात नहीं मानी थी क्योंकि उन्हीं दिनों डाकुओं ने मुझे उठा ले जाने का प्रयत्न किया था।'

यशपाल भौंचक्का से रह गए—फिर वह धीरे-धीरे बिस्तर से उतर कर खड़े हो गये—उनका पूरा बदन थर-थर कांप रहा था। उन्होंने कंपकंपाती आवाज में कहा—

'मुन्नी'''मेरी लाल'''तू'''तू सचमुच जिन्दा है?'

'मामा'''मामा'''।'

दूसरे ही क्षण मुन्नी यशपाल के सीने से लगी बिलख-बिलख कर रो रही थी''' यशपाल भी रो रहे थे'''सेठ साहब की आंखों में भी आंसू थे'''नर्स हैरान खड़ी तीनों को देखे जा रही थी।

'बेटी'''' यशपाल ने कहा, 'तुझे गांव से विदा करके हम जल्दी-जल्दी गांव खाली करने की योजना बनाने लगे क्योंकि हमें सूचना मिल चुकी थी कि यमुना का बढ़ता हुआ पानी बहुत जल्दी गांव को अपनी लपेट में ले लेगा'''लेकिन बाढ़ ने हमें गांव छोड़ने का भी अवकाश नहीं दिया'''बस एक साथ ही गांव पर धावा बोल दिया और जिसके जिधर सींग समाए उठ भागा'''मैं धर्मपाल और रामदेई एक-दूसरे के हाथ थामे कमर-कमर पानी में बढ़े जा रहे थे और पानी था कि उछलता हुआ प्रतिक्षण चढ़ता ही जा रहा था'''धार इतनी तेज थी कि हम इतना प्रयत्न करने पर भी एक-दूसरे के साथ न रह सके'''तीव्र बहाव ने हमारे पैर उखाड़ दिए'''मैं एक तुच्छ तिनके के समान बहता चला गया'''फिर न जाने किस प्रकार मैं रिलीफ कमेटी के मेम्बरों के हाथ पड़ गया—क्योंकि जब मुझे होश आया तो मैं हीरापुर से सौ डेढ़ सौ मील दूर एक रिलीफ कैम्प में था।'

'और बापू'''मां'''।' पद्मिनी की आवाज कांप उठी।

'उन दोनों का आज तक कुछ पता नहीं चला।'

पद्मिनी फिर रो पड़ी और सेठ साहब उसके सिर पर स्नेह से हाथ फेरने लगे'''फिर भर्राई हुई आवाज में बोले—

'मत रोओ बेटी'''होनी को कौन टाल सकता है।'



'हां बेटी'''' यशपाल ने कहा, 'अब तो धीरज से ही काम लेना पड़ेगा।'

'और फिर'''बेटी तुम अनाथ थोड़े ही हो'''मैं तुम्हारा पिता मौजूद हूं और शोभना तुम्हारी मां है।'

'डैडी'''डैडी'''।' पद्मिनी सेठ साहब के सीने से लग गई।

सेठ साहब उसे प्यार से थपकते रहे। थोड़ी देर बाद पद्मिनी ने यशपाल से पूछा—

'मामा! अपना गांव हीरापुर तो आबाद है ना!'

'बेटी'''बाढ़ ने उस गांव का नाम-निशान तक मिटा दिया था''' बाढ़ के बाद जब हीरापुर के बचे-खुचे लोग वहां पहुंचे तो वहां किसी मकान की नींव तक का भी चिन्ह नहीं था'''हां, मेरा गांव थोड़ा-बहुत जरूर बच गया था'''और मैं वहीं रहने लग गया था'''आज तक वहीं हूं'''थोड़ी बहुत खेती-बाड़ी कर लेता हूं—यहाँ बम्बई में तो मैं बीज खरीदने आया हुआ था।'

'भाई साहब!' सेठ साहब ने यशपाल के सामने हाथ जोड़कर कहा, 'मेरी आपसे एक विनती है।'

'हां हां, कहिए'''हाथ जोड़कर मुझे लज्जित मत कीजिए।'

सेठ साहब ने यशपाल को विस्तार से बताया कि किस प्रकार उनकी बेटी भयानक बाढ़ में बह गई थी और उसके स्थान पर उन्हें मुन्नी मिली थी और किस प्रकार अंधी पत्नी शोभना आज तक मुन्नी को अपनी ही बेटी पद्मिनी समझती है।

'और अगर कभी मेरी पत्नी को इस सच्चाई का ज्ञान हो गया तो वह शायद इतना बड़ा आघात सहन न कर सकेगी।' सेठ साहब बोले।

'यह आप क्या कह रहे हैं सेठ साहब।' यशपाल ने कहा, 'मेरी भानजी बाढ़ में बह गई थी'''आपने उसे नया और भरपूर जीवन दिया है'''अब यह हमारी नहीं आप ही की बेटी है'''और इसके ऊपर जितना अधिकार आपका है उतना हमारा नहीं—आप बिल्कुल चिन्ता मत कीजिए'''आपकी पत्नी के सामने मेरी जबान से कभी यह भेद नहीं खुलेगा।'

'मैं आपका उपकार जीवन भर नहीं भूलूंगा'''भाई साहब।'

'इतने में नर्स ने आकर कहा—

'डाक्टर कह रहे हैं, अब आप इन्हें आराम करने दीजिए।'

वह सब उठकर बाहर आ गये।

सेठ यशवंतराय का बंगला दुल्हन के समान सजा हुआ था। आज पद्मिनी और अविनाश की शादी का मुहूर्त था'''बहुत सारे मेहमान आ चुके थे कुछ लोग आने शेष थे। सेठ साहब और शोभना मेहमानों के स्वागत के लिए फाटक पर खड़े थे'''अन्दर कमरे में पद्मिनी की सहेलियां उसको बना-संवार रही थीं—बाहर लग्न-मंडप सजा हुआ था।

अचानक बारात के बैंड की आवाज पद्मिनी के कानों से टकराई और उसका दिल जोर-जोर से धड़क उठा। लड़कियां उठकर बारात देखने भागीं तो पद्मिनी ने एक लड़की का हाथ पकड़ लिया और जल्दी से बोली—

'रेखा'''जरा मुझे इतना मालूम करके बता दे कि डैडी ने मामा को हस्पताल से बुलवा लिया या नहीं?'

शेष आगामी अंक में

आपस की बातें

चचा बातूनी की कलम दवात से

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

मुकेश भटनागर, आशिक—चित्तौड़गढ़ : डीयर अंकल, किसी के प्यार का इम्तहान लेना हो तो क्या करना चाहिए ?

उ० : अपने जीवन का बीमा करवा लेना चाहिए। क्योंकि आमतौर पर ऐसे समाचार मिलते रहते हैं कि फलां जगह इम्तहान में चाकू निकल आये।

बलवन्त सिंह बिस्ट—पिथौरागढ़ : चाचाजी, विधान सभाओं के चुनावों के बारे में आपके क्या विचार हैं ? जनता पार्टी का क्या स्थान रहेगा ?

उ० : हमारे विचारों की बात छोड़िए बलवन्त सिंह जी। अब तो जनता पार्टी के बड़े-बड़े महारथी भी कहने लगे हैं—चार दिन की चान्दनी फिर अंधेरी रात है।'

चन्द्रभान अनाड़ी—जबलपुर : इस रंग बदलती दुनिया का अगला रंग रूप कैसा होगा ?

उ० : यह भला कौन बता सकता है कि गिरगिट का अगला रंग रूप कैसा होगा।

मुकेश कुमार गुप्ता—खुर्जा : चाचा जी, हमारे शहर में शीघ्र ही एक विशाल बातूनी सम्मेलन होने वाला है। क्या आप उसमें शामिल होकर अपनी बातों से श्रोताओं का मनोरंजन करने की कृपा करेंगे।

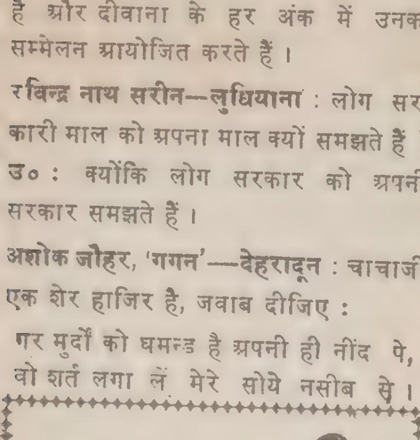
उ० : आप क्यों इतना कष्ट कर रहे हैं। हमारा हर पाठक एक से बढ़कर एक बातूनी है और दीवाना के हर अंक में उनका सम्मेलन आयोजित करते हैं।

रविन्द्र नाथ सरीन—लुधियाना : लोग सरकारी माल को अपना माल क्यों समझते हैं ?

उ० : क्योंकि लोग सरकार को अपनी सरकार समझते हैं।

अशोक जौहर, 'गगन'—देहरादून : चाचाजी एक शेर हाजिर है, जवाब दीजिए :

गर मुर्दों को घमन्ड है अपनी ही नींद पे,
वो शर्त लगा लें मेरे सोये नसीब से।



उ० : यह आप से किसने कह दिया कि मुर्दों को अपनी नींद पर घमन्ड होता है ? हमारे जैसा नाजुकमिजाज मुर्दा तो कहता है।

जाना मेरे मजार से जाना परे परे,
ठोकर से जाग उठते हैं आशिक मरे मरे।

मुकेश भटनागर, 'दिलदार'—चितौड़गढ़ : चाचाजी, सच्चे मित्र की पहचान क्या है ?

उ० : आजकल तो सच्चे मित्र वे हैं जो उधार लेकर वापस नहीं देते और कमा कर खाना पाप समझते हैं और डंके की चोट कहते हैं :

लेकर दिया कमा कर खाया,
समझो जीवन व्यर्थ गंवाया।

सुशील डेविड—मण्डी गोबिंदगढ़ : डीयर अंकल, परवाना जानता है कि वह शमां के पास जाकर जल जाएगा। फिर शमां में ऐसी कौन सी बात है कि परवाना उसकी ओर खिंचा चला जाता है ?



उ० : क्योंकि उसे शमां की इस बात पर एतबार होता है कि वह परवाने से प्यार निभाने की कसम खाये है। इसके लिए एक शायर ने कहा है :

बदगुमानी हुई जब शमां से परवाने को,
शमां ने आग रखी सर कसम खाने को।

मनोज चड्डा—गुड़गावां : चाचाजी, क्या आपको याद है कि आपने जीवन में सबसे बड़ी अकलमंदी कब की थी ?

उ० : जब हम पाठकों को अपने से अधिक अकलमन्द समझने लगे थे।

आर० के० भाटिया—मोती बाग, नई दिल्ली : मैं दीवाना के लिए चुटकुले भेजूं तो क्या आप छापेंगे ?

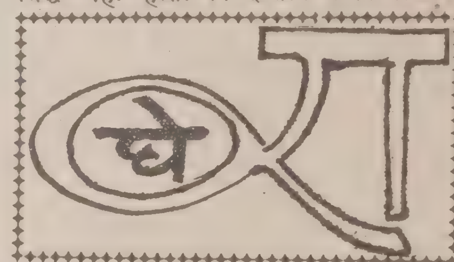
उ० : चुटकुले, कहानी कविता आप कुछ भी भेजिये। प्रकाशित करने की शर्त एक ही है कि आपकी भेजी सामग्री में हमारी पसन्द की सामग्री हो।

मनोहर होतवानी—रायपुर : प्यार और इश्क में क्या अन्तर है ?

उ० : वही, जो "बेंगन" और "बताऊं" में

एम० एस० गुजराल—करनाल : तराजू में इन्साफ तोलने वाले की आंखों पर पट्टी बंधी होती है, फिर भी वह तराजू के पलड़े बराबर रखता है। ऐसा क्यों ?

उ० : यह बताने के लिए कि जब इन्साफ तोलने वाला पलड़ों को बराबर करता है तो यह नहीं देखता कि इनमें अपना कौन है और बेगाना कौन है। पर इस बात से यह सिद्ध नहीं होता कि इन्साफ करने वाले के



लिए अंधा होना जरूरी है। इससे तो उल्टा अनर्थ हो जाएगा। आपने वह कहावत सुनी होगी :

अन्धा बांटे रेवड़ियां, मुड़-मुड़ अपनों को देय

नरिन्द कुमार निन्दी—कपूरथला : चचा जान, क्या ख्वाब को हकीकत बनाया जा सकता है ?

उ० : जी हाँ। जनता सरकार के राज्य काल की तरह, जिसके बारे में आज लोग कहते हैं :—ख्वाब था जो कुछ भी देखा, जो सुना अफसाना था।

सुमन कुमार मानन्धर—काठमाण्डो, नेपाल : चाचा जी, सुना है दो दिन की जिन्दगी में एक दिन मरना होता है, बाकी एक दिन क्या करें ?

उ० : हो सके तो सूर्य को एक जगह पकड़ कर बैठ जाइये ताकि अगला दिन आने ही न पाये।

केवल प्रकाश दुआ—काशीपुर : सुखपूर्वक जीने के लिये क्या करना चाहिए ?

उ० : हर समय हंसते रहने के लिए दीवाना पढ़ना चाहिए।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : आपने रोमांस करने की ट्रेनिंग ली है या नहीं ?

उ० : हमारे सर की हालत देखकर आप क्या अनुमान लगाते हैं ?

कन्हैया वैष्णव—हैदराबाद : चाचा जी, हमने सुना है कि आप जोरु के गुलाम हैं। क्या यह सत्य है ?

उ० : जी नहीं। अगर हमारा जीवन एक ताश की गड्डी होता तब भी उसमें गुलाम बनने की बजाये जोकर बने हुये नजर आते।

आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२


काकाजी
अरे! यह किसके खाँसने की आवाज़ इतने ज़ोरों से आ रही है!
खौं खौं खौं
ओह! राजेश, तुम्हें कितनी बार समझाया है कि सिगरेट तुम्हारे लिए हानिकारक है!
क्या करूं अंकल यह आदत... खौं खौं..... खौं.....
बस-बस मैं समझ गया! खाओ मेरी क़सम कि आइंदा सिगरेट से दूर रहोगे!
मैं वादा करता हूँ अंकल, सिगरेट से मैं हमेशा दूर रहूँगा!
अगले दिन-
अरे राजेश! यह मैं क्या देख रहा हूँ?!
आप ही ने तो कहा था कि मैं सिगरेट से दूर रहूँ!

सोचिये

10 रुपये जीतिये

प्रेमपत्र

एक विद्वान के पास एक प्रेम पीड़ित युवक आया और अपनी कथा बताने लगा, 'मैं उसके बिना नहीं रह सकता। उसे मैंने सैकड़ों प्रेम पत्र लिखे लेकिन उसने एक का भी उत्तर नहीं दिया। उस पर कोई असर नहीं होता।'

विद्वान ने पूछा, 'तुम प्रेमपत्र किससे लिखते हो ?'

'बॉलपाइन्ट पॅन से', उत्तर मिला।

विद्वान ने सलाह दी, 'तुम अब कलम से प्रेम पत्र लिखना शुरू करो।'

काफी समय बाद वह युवक फिर विद्वान के पास आया। इस बार उसका चेहरा खिला था। वह विद्वान के चरणों पर गिर पड़ा, 'आपने मुझे जीवन दे दिया। वह अब प्रेम-पत्रों के उत्तर देने लगी है। लेकिन मैं अब तक समझ नहीं पाया कि कलम से और बॉल पाइन्ट पॅन से लिखने में यह अन्तर क्यों ? कृपया यह रहस्य बताइये।'

विद्वान मुस्कराया, 'बेटा बॉलपाइन्ट पॅन बहुत तेज रफ्तार से बिना रुके लिखता है। उसके पास तुम्हारे दिल की बात सुनने का समय नहीं है। कलम हर दूसरा-तीसरा शब्द लिखने के बाद तुम्हें सोचने और तुम्हारे प्रेम भावनाओं के व्यक्त करने वाले सही शब्द ढूंढने का पूरा अवसर देता है। बस यही फर्क है। एक में केवल अक्षरों का जमघट है और दूसरे में तुम्हारा दिल बोलता है।'

अंतिम तिथि :-३० अप्रैल १९७०

सारांश

अनमोल लतीफे

● ग्राहक वेटर से, ''भय्या, पहले तुम्हारी थाली में चावल काफी हुआ करते थे ! अब बहुत थोड़ा लगता है।'

वेटर, 'साहब बात यह है कि दीवारें तुड़वाकर हमने हॉल पहले से बहुत बड़ा बनवाया है इसीलिए प्लेटों में पड़ा खाना पहले की अपेक्षा थोड़ा लगता है।'

● एक आदमी सीढ़ी लेकर बाजार से जा रहा था। अचानक सीढ़ी लगने से एक फैशनेबल दुकान के बड़े शोकेस का शीशा टूट गया। वह आदमी सीढ़ी वहीं फेंक भागने लगा। दुकानदार ने देख लिया और दो तीन कर्मचारियों को साथ ले वह पीछे दौड़ा। उन्होंने उसे कुछ देर में ही पकड़ लिया।

दुकानदार बोला, 'तुमने मेरे शोकेस का शीशा तोड़ डाला है।'

'हां तोड़ा है !' वह व्यक्ति सांस लेते हुए बोला, 'और तुमने देखा नहीं शोकेस के पैसे लाने के लिये मैं किस तरह दौड़कर घर जा रहा था ?'

● राजनीतिक पार्टी का अधिकारी—(कार्यकर्त्ता से) तुम झूठ बोलते पकड़े गये हो। जानते हो झूठ बोलने वालों के साथ हमारी पार्टी क्या करती है ?

कार्यकर्त्ता—पार्टी उसे लोक सभा चुनाव का टिकट दे देती है।



कविताएं

नायिका बनाम नाई

एक कवि महोदय
एक कवि सम्मेलन में
अपनी कविताएं
सुना रहे थे,
हर रस पर।
तीर-औ तुक्के चला रहे थे।
इस बार कहने लगे—
'श्रोताओं',
मेरी बात पर ध्यान दो,
हाथों को जेब से निकाल लो
अब मैं आपको
'नायिका भेद' बताने जा रहा हूं,
इसका एक एक रहस्य।
खोलने जा रहा हूँ।''
तभी एक नाई
हाथ में उस्तरा लिये
मंच पर उछल कर चढ़ आया,
बल्ब के सामने
चमकदार उस्तरा हिलाकर दिखलाया।
बोला—
''अगर इस कवि के बच्चे ने
आपको
मेरा भेद बतलाया
तो मैं इसकी गर्दन साफ कर दूंगा,
पर पहले
श्रोताओं में बैठी इसकी पत्नी के सामने
इसकी प्रेमिका का भेद
खोल दूंगा !'

दिवाली

सेठ गरीब दास
और अधिक
अमीर होने की लेकर आस
दिवाली की रात
'लक्ष्मी आयेगी' सोचकर
घर के
सारे किवाड़ खोलकर
आराम से सोये।
जब नींद से उनकी
हो गईं आंखें बन्द
तो घर का
सारा सामान लेकर
चम्पत हो गया
कोई 'लक्ष्मी चन्द'।

क्यों और कैसे

प्र० : हमें पृथ्वी घूमती हुई प्रतीत क्यों नहीं होती तथा मौसम इसके घूमने से कैसे बदलते हैं ? नरेश—लुधियाना

उ० : कुछ शताब्दियों पूर्व तक भी मनुष्य की धारणा थी कि पृथ्वी एक स्थान पर ठहरी हुई है तथा सूर्य, चन्द्रमा, तारे इसके चारों ओर घूम रहे हैं, क्यों नहीं ? ऐसा ही तो प्रतीत होता है, पृथ्वी तो किसी को भी कभी घूमती महसूस नहीं होती। यदि पृथ्वी घूमती है तो सभी वस्तुएं जिनमें सागरों का पानी भी शामिल है उड़नी चाहिएं।

आज निस्सन्देह हमें मालूम है कि पृथ्वी निरन्तर दो प्रकार से घूम रही है। ये सूर्य के चारों ओर घूमने के साथ-साथ अपनी स्वयं की धुरी पर भी घूम रही है पृथ्वी के घूमने को हम महसूस इस लिए नहीं कर पाते हैं क्योंकि हम पृथ्वी की सतह के साथ साथ ही घूमते हैं तथा हमारे चारों ओर की हवा भी हमारे साथ ही घूमती है। गुरुत्वाकर्षण शक्ति द्वारा सागरों के पानी सहित हर वस्तु अपने स्थान पर टिकी रहती है।

पृथ्वी के घूमने का पता हमें कई बातों पर ध्यान देने तथा महसूस करने से लगता है। दिन और रात पृथ्वी के घूमने के कारण ही होते हैं। यदि पृथ्वी न घूमती, तो पृथ्वी के सूर्य की ओर वाले भाग में सदा दिन का प्रकाश तथा सूर्य के दूसरी ओर वाले भाग में सदा ही अन्धकार फैला रहता, परन्तु पृथ्वी का हर भाग हर चौबीस घंटे में एक बार प्रकाश तथा अन्धकार की ओर अवश्य जाता है। यही हमारे दिन और रात होते हैं।



पृथ्वी की दूसरी हरकत जिसे हम महसूस नहीं करते परन्तु जो हमारे जीवन में एक बड़ा अन्तर लाती है वो है, पृथ्वी का सूर्य के चारों ओर घूमना। इस हरकत से ही मौसम बदलते हैं और इसका हमारे जीवन पर निरन्तर प्रभाव पड़ता है। वास्तव में पृथ्वी का सूर्य का ये ही चक्कर जिसमें पृथ्वी को ३६५ $\frac{1}{4}$ दिन लगते हैं वर्ष कहलाता है। इस वर्ष द्वारा ही हम इतिहास तथा अपने जीवन को नापते हैं।

मौसम में अन्तर पृथ्वी की धुरी के झुकाव में तबदीली आने से होता है। ये झुकाव अनुलम्ब (Vertical) से २३/ २ डिग्री होता है। हर ध्रुव या मेरु आधे वर्ष सूर्य की ओर और आधे वर्ष सूर्य से दूसरी ओर को झुकता है। इस कारण छः माह पृथ्वी के उत्तरी भाग को सूर्य का अधिक प्रकाश अर्थात अधिक गर्मी प्राप्त होती है, तथा दूसरे छः माह इसे कम प्रकाश प्राप्त होता है और मौसम ठंडा हो जाता है।



प्र० : संसार का सबसे ऊंचा वृक्ष कितना ऊंचा है तथा ये कहां हैं ? वृक्षों की आयु कैसे पता लगती है ? बृजेश-मथुरा

उ० : हरे पौधे सारे संसार में पाये जाते हैं। वृक्ष भी हरे पौधे ही हैं। इनके भी दूसरे हरे पौधों के समान जड़, तने, पत्ते तथा बीज होते हैं। वृक्ष हरे पौधों की जाति में सबसे पुराने हैं। उत्तर पश्चिम अमरीका में पाये जाने वाले सीकोइया के वृक्ष तो चार हजार वर्ष से भी पुराने हैं। इसका अर्थ है कि वृक्ष कोलम्बस द्वारा अमरीका की खोज किये जाने से भी पहले के हैं। हरे पौधों में सबसे बड़े भी वृक्ष ही होते हैं। संसार में पाये जाने वाले सब वृक्षों में ऊंचे केलीफोनिया के विशाल 'रेडवुड' वृक्ष माने जाते हैं। इस स्थान के हमबोल्ट नैशनल फोरेस्ट में संसार में सबसे ऊंचा माना जाने वाला ३६४ ऊंचा विशाल वृक्ष है, इस वृक्ष का नाम 'फाऊंडरस वृक्ष' है। इस वृक्ष की ऊंचाई लगभग कुतुब मीनार जितनी है।

कुछ विशेषज्ञों का मत है कि बहुत समय पहले आस्ट्रेलिया में पाये जाने वाले युकलैपटस के वृक्ष भी रेडवुड वृक्षों के समान ही ऊंचे होते थे परन्तु अब इनकी ऊंचाई



लगभग पचास फुट कम हो गई है। दो और किस्म डगलस-फर तथा सिकोइया के वृक्ष भी तीन सौ फुट तक ऊंचे होते हैं।

वृक्ष की जड़ें न केवल धरती से पानी तथा खनिज पदार्थ ग्रहण करती हैं अपितु वृक्ष को धरती पर सीधा खड़ा रखना भी जड़ों का ही कार्य है तथा स्वाभाविक ही है कि इतने ऊंचे वृक्ष को सीधा खड़ा रखने के कठिन कार्य को करने के लिए जड़ों के एक बहुत ही बड़े तथा मजबूत समूह की आवश्यकता है। इसी कारण इसकी प्रकृति ने बहुत ही होशियारी से व्यवस्था की है। वृक्ष धरती के ऊपर जितना लम्बा होता है उसकी जड़ें धरती के भीतर उतनी ही गहराई तक जाती हैं।

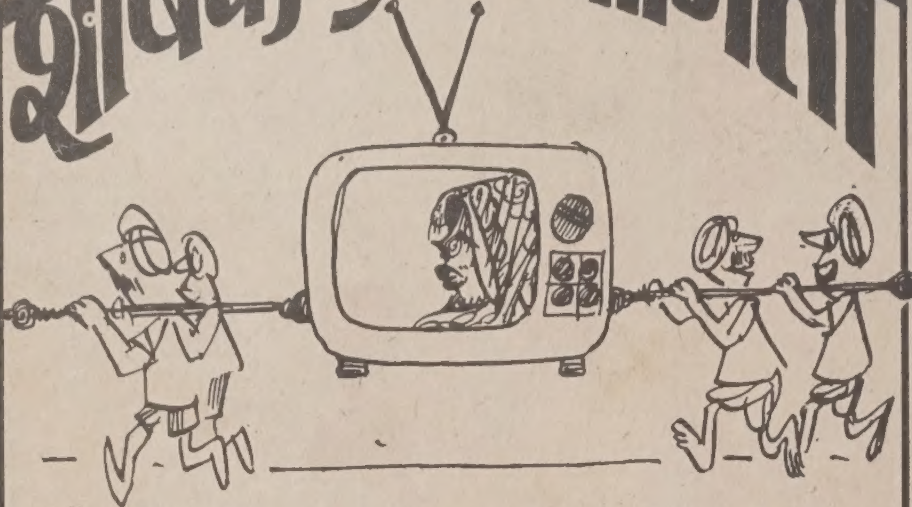
वृक्षों की आयु का पता वैज्ञानिक उसकी लकड़ी के भीतर की तहों के निशानों को गिनकर लगाते हैं। लकड़ी आड़ी काटने पर अधिकतर वृक्षों की लकड़ी पर धारियाँ दिखाई देती हैं। हर वर्ष वृक्ष की छाल के नीचे तथा पुरानी लकड़ी के ऊपर नई लकड़ी की तह उगती है ये ही तह लकड़ी पर धारियों के निशान बनाती है। वृक्षों के तने की लकड़ी की हर धारी एक वर्ष दर्शाती है। इस प्रकार हर एक वर्ष के बीतने पर नयी धारी बनने के साथ साथ तना मोटा होता जाता है। वृक्ष में धारियाँ न केवल तने पर बनती हैं अपितु टहनियों तथा शाखाओं पर भी हर वर्ष ही बनती हैं क्योंकि पेड़ केवल ऊपर को और शाखों के सिरों पर ही बढ़ता है, इसके अंग कभी भी अपने पैदा होने के स्थान से नहीं हटते।

क्यों और कैसे
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


नटखट मिक्की
जगजीतसिंह राणा
मम्मी… मम्मी !!…अपने यहाँ जो नौकरानी काम करती हैं न…उसे रामू कभी-कभी तंग करता हैं
कैसे बेटा?
कभी वह उसके गालों पर हाथ फेरता हैं…… और कभी उसका हाथ खींचता हैं
अप्रैल 1
रामू को बुलाकर पूछा जाता हैं।
रामू ! तुम अन्दर क्या कर रहे थे?
जी…मालकिन !…सब्ज़ी काट रहा था
क्यों…बेटा, मिक्की ! तुम झूठ बोल रहे थे?
मम्मी ! मैंने तो आपको अप्रैल-फूल बनाया हैं…वह रामू नहीं……डैडी थे


आदर्श
आधुनिक
पति के लक्षण
आजकल किचन में बिजली के इतने तरह के सामान होते हैं कि रोज कुछ न कुछ खराब होता ही रहता है। आदर्श पति बनने के लिए इलेक्ट्रिकल रिपेयर मैकेनिक का डिप्लोमा होना जरूरी है। आदर्श पति के हाथ में पेचकस ऐसे ही जरूरी है जैसे सैनिक के हाथ में बन्दूक।
आदर्श पति वह है जो दिन भर भीगी बिल्ली बना रहे लेकिन रात को कहीं खटका हो तो शेर बन जाये। बीबी के एक इशारे पर बाबू इतवारी लाल से मुहम्मद अली बन जाये।
सब्जी मंडी
आदर्श पति को बाजार से सामान लाना पड़े तो ऐसा समझे कि उसके पैरों के स्थान पर मोदी कॉंटीनैन्टल टायर लगे हैं।
अभी आई तैयार होके पांच मिनट में।
बीबी तैयार होने में आधे-आधे घंटे के कितने ही पांच मिनट लगा दे, पति विचलित न हो। ऐसे ही शांत बना रहे जैसे दुर्वासा ऋषि तपस्या में लीन हों।
मिसिज कमला को गोभी का अचार लगाना भी नहीं आता और वह जो है न.....
आदर्श आधुनिक पति वह है जो अपनी पत्नी की निरर्थक बातें भी उसी प्रकार चुपचाप ध्यान से सुने जैसे अर्जुन ने श्री कृष्ण जी के उपदेश सुने थे अर्जुन ने धनुष नीचे रख दिया था, आदर्श पति अपना कॉमनसेंस रख देता है।

शीर्षक प्रतियोगिता



ऊपर दिया व्यंग्य चित्र देखिये और समझिये ! फिर आप यह सुझाइये कि पीछे वाला कहार दूसरे कहार को क्या कह रहा है । केवल एक वाक्य का प्रयोग करें । शीर्षक से व्यंग्य चित्र का हास्यरस और बढ़ना चाहिए ।

20 रु० इनाम जीतिये

अपने वाक्य केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें ।
दीवाना के कार्यालय में हल पहुंचने की ।
अन्तिम तिथि : ३० अप्रैल १६८०

दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

कवि

एक कवि जी थाने बुलाये गये
उन पर
चार कान्स्टेबल लगाये गये
बन्द थी हवालात
उनसे कबूलवानी थी
सच्ची-सच्ची बात
मगर सुबह जब खोला गया
थाने का द्वार
डर कर भागा थानेदार
चारों कान्स्टेबल
वहीं औंधे पड़े थे
उनके बीचों-बीच कवि जी
अपनी कविता पढ़ते हुए
खड़े थे ।

ज्ञान

भगवान उवाच—
हे पार्थ धनुर्धर
तुझे किस का डर
कुर्सी है अजर अमर
न शस्त्र इसे सकते हैं मार
और न अग्नि
इसे जलाकर कर सकती है क्षार
इसलिए तू उठ और तन जा,
कुर्सी के लिए
दलबदलू बन जा ।

मिश्रीलाल जायसवाल

पृष्ठ ७ का शेष भाग

'तो फिर यह तार भी आपको नहीं मिलेगा ।'

एक टिकट बाबू ने टिकट देने से पहले उपहार की मांग की । उसे बताया गया कि वह सरकारी कर्मचारी है और यात्रियों को टिकट न देकर अपनी ड्यूटी नहीं बजा रहा ।' उसके पास पहले से घड़ा-घड़ाया उत्तर तैयार था—'सरकारी कर्मचारी तो और भी हैं । आप उनसे ऐसा क्यों नहीं कहते ।'

एक इंजन ड्राइवर ने जान-बूझकर गाड़ी रोक ली और उसे उस समय तक रोके रखा जब तक यात्रियों ने उसकी मुट्ठी गरम नहीं की ।

एक राहगीर ने एक रोगी को हस्पताल का रास्ता बताने से पहले पांच रुपये उपहार स्वरूप प्राप्त किए । एक व्यक्ति को जब 'नमस्ते' की गई तो उसने बदले में 'नमस्ते' कहने के लिए दस रुपये की मांग की । एक अन्य व्यक्ति से जब यह पूछा गया कि 'कहिए क्या हाल है ?' तो उसने उत्तर' दिया 'अगर आप सचमुच मेरा हाल पूछना चाहते हैं तो पूरे पन्द्रह रुपये निकालिए ।'

महाराजा तकली प्रसाद प्रतिदिन रिश्वतखोरी की विचित्र-विचित्र कहानियां सुनते और मन ही मन प्रसन्न होते कि वह खूब रंग ला रही है । रात के समय भेष बदलकर वे अपनी प्रजा का हाल-चाल जानने के लिए निकला करते तथा इस प्रकार के मनोरंजक संवाद सुन-सुनकर आनन्दित होते :

'क्यों साहब ! आपकी घड़ी में क्या बजा है ?'



'जनाब पहले उपहार भेंट कीजिए फिर समय बतायेंगे ।'

'आप खड़े क्यों हैं, कुर्सी पर बैठ जाइए ।'

'कुर्सी पर बैठने का आप क्या देंगे ?'

'वह देखिये, वह रहा ईद का चांद ।'

'देखें तो तब जब उपहार का फैसला हो जाए ।'

समय गुजरता गया और महाराजा तकली प्रसाद इस प्रकार के संवादों के इतने अभ्यस्त हो गए कि उन्हें इन पर रोना आता न क्रोध । लेकिन एक रात उन्होंने एक ऐसा हृदय-विदारक दृश्य देखा कि वे थर्रा गए । पूर्णिमा के चांद के प्रकाश में उन्होंने एक स्त्री को सड़क के किनारे बैठे देखा । उसकी गोद में दूध पीता बच्चा था जो बिलख-बिलख कर अपनी मां की छाती तक मुंह ले जाने का प्रयत्न कर रहा था । मालूम होता था उसे बहुत भूख लगी थी । लेकिन उसकी मां बार-बार अपने हाथ से उसके मुंह को पीछे हटाते हुए कह रही थी 'बेटा ! अब केवल चीखने-चिल्लाने से दूध नहीं मिलेगा—पहले उपहार निकालो ।'

'महाराजा तकली प्रसाद यह दृश्य देखकर स्तब्ध रह गए और अनायास ही उनके मुंह से निकला 'हे भगवान ! अगर मेरी जाति इतनी नीच और अधम हो गई है तो इसे तुरन्त तहस-नहस कर दे ।'

भगवान जाने महाराजा ने यह प्रार्थना किस शुभ घड़ी में की थी कि स्वीकार हो गई—और कहते हैं कि उस रात ऐसा भूकम्प आया कि कुछ ही क्षणों में जिल्लत नगर नामक वह जलील शहर तबाह व बर्बाद हो गया । ●